

# कृषक



# दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN : 2583-4991

● भोपाल मंगलवार 09 से 15 जून 2026 ● वर्ष-27 ● अंक-03 ● पृष्ठ-20 ● मूल्य-20 रु. ● RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र.एम.पी./भोपाल/625/2024-26



## बीज विशेषांक 2026

- आरएमपीसीएल की संगोष्ठी 5
- सोयाबीन बीजोपचार की विधि 7
- बीजोपचार के पश्चात बुवाई 8
- उन्नत तरीके से उड़द की खेती 9
- खरीफ की उन्नतशील प्रजातियां 10
- सोयाबीन की खेती 11
- खरीफ में मक्का लगाए 13
- अंकुरण परीक्षण का महत्व 15
- स्वराज 855 FE की ताकत 17



**इफको का हे वादा, लागत कम उत्पादन ज्यादा**

**फसलों की भरपूर पैदावार के लिए इफको के उत्पादों की उत्कृष्ट श्रृंखला**

**आत्मनिर्भर भारत आत्मनिर्भर कृषि**

**इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड** राज्य कार्यालय- ब्लॉक 2, तृतीय ताल, पर्यावास भवन अरेग हिल्स, भोपाल (म.प्र.)

ऑफिस-लानचनडी रोड : [www.nanoarea.in](http://www.nanoarea.in) - [www.nanodap.in](http://www.nanodap.in) सहायक कार्यालय-लानचनडी रोड-1800 189 1987 [/iffco.coop](https://www.facebook.com/iffco.coop) [/iffco.coop](https://www.instagram.com/iffco.coop) [/iffco PR](https://www.youtube.com/channel/UCvK1P8) [/iffco](https://www.whatsapp.com/channel/00299111111111111111)

**RMPCL**

**ZIRON**

**नया तरीका, नई उमंग, मेरी फ़सले बढ़ेगी ZIRON के संग**

फसल के हर पड़ाव पर **मैग्नीशियम, जिंक, बोरॉन** से खरीफ में दिखेगा असली फर्क।

**यही है किसान के उन्नति का सही फॉर्मूला**

[www.rmphosphates.com](http://www.rmphosphates.com) | Toll free: 8956926412



# 10 पे 35 का दम

₹ 10 000/-\* की बुकिंग पर पाएं / ₹ 35 000/-\* की रसीद

₹ 25 000/- तक का फायदा\*

बुकिंग व डिलीवरी अयधि 15 जून 2026 तक\*

3600-2 TX Super

49.5 HP

38.8A KW

- 2000 Kg<sup>TM</sup> लिफ्टिंग क्षमता
- डबल क्लच
- पावर स्टीयरिंग
- तेल में डूबे हुए डिस्क ब्रेक



असली हीरो की असली ताकत

यह ऑफर न्यू हॉलैंड 3600-2 TX Super पर मान्य है

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें - 7412063607

Visit us at: [www.newholland.com/in](http://www.newholland.com/in)

\*नई डीजल रोपाव न्यू एंटीज के साथ डेवा से डिजली के रॉफेन्वा से - फिन्वा व रसी लागू । \*\*ब- बाईट पिठिल पर उठने की अणवा

\*6 जता 1- पनगी Workmocter 105, Blue Series Simba 30 और Blue Series Simba 20 पर लागू नहीं है ।

विशेष गत अणवाओं के सिव गिलन डुववा अडेन से सिंगु दे, इनमे अकन नः जरिह अोजिनेवा । गुणवा मही बी अणवा है । कुवाभ-अ अरकवित अणवर से अणवा है अणवा है ।

In-house Finance

CNH CAPITAL





## कृषि मंत्री ने शुरू किया 'खेत बचाओ अभियान'

संतुलित खाद और वैज्ञानिक खेती से बढ़ेगी किसानों की समृद्धि: श्री चौहान

रायसेन। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मध्य प्रदेश के रायसेन जिले के ग्राम रमासिया से राष्ट्रव्यापी 'खेत बचाओ अभियान' का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि मिट्टी बचेगी तो खेती बचेगी, किसान मजबूत होगा और देश समृद्ध बनेगा। उन्होंने संतुलित उर्वरक उपयोग, मिट्टी परीक्षण, सायल हेल्थ कार्ड, प्राकृतिक खेती, जल संरक्षण तथा वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों को अपनाने का आह्वान किया।

1 से 30 जून तक देशभर में चलने वाले इस अभियान के शुभारंभ अवसर पर श्री चौहान ने कहा कि धरती हमारी माता है और उसकी सेहत की रक्षा करना हम सभी की जिम्मेदारी है। उन्होंने



किसानों से अपील की कि वे अंधाधुंध रासायनिक खाद एवं कीटनाशकों का उपयोग न करें, बल्कि मिट्टी की जांच के आधार पर आवश्यकता अनुसार उर्वरकों का प्रयोग करें। उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की उर्वरता घटती है और उसमें मौजूद लाभकारी सूक्ष्म जीव नष्ट हो जाते हैं, जिससे उत्पादन और खेती की

लागत दोनों प्रभावित होते हैं।

श्री ने कहा कि 'खेत बचाओ अभियान' केवल एक सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि धरती माता को बचाने का राष्ट्रीय संकल्प है। इसके तहत कृषि वैज्ञानिक, कृषि विश्वविद्यालयों के विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केंद्रों के अधिकारी, कृषि विभाग की टीमों तथा जनप्रतिनिधि गांव-गांव पहुंचकर किसानों को जागरूक करेंगे। किसानों को मिट्टी परीक्षण, संतुलित पोषण प्रबंधन, प्राकृतिक खेती, आधुनिक बुवाई तकनीक, जल संरक्षण और उन्नत खेती के तरीकों की जानकारी दी जाएगी। श्री चौहान ने सायल हेल्थ कार्ड के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि प्रत्येक किसान के पास अपनी भूमि का सायल हेल्थ कार्ड होना चाहिए, ताकि वह जमीन की आवश्यकताओं के अनुसार खाद का उपयोग कर सके।

## केरल में मानसून की जोरदार दस्तक

इस साल बारिश सामान्य से कम रहने की आशंका



नई दिल्ली। भारत में दक्षिण-पश्चिम मानसून ने 4 जून 2026 को केरल में दस्तक दे दी है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने इसकी आधिकारिक घोषणा की। आमतौर पर मानसून हर साल एक जून के आसपास केरल पहुंच जाता है, लेकिन इस बार यह लगभग तीन दिन की देरी से आया है। मानसून के आगमन के साथ ही देश में चार महीने तक चलने वाले वर्षा ऋतु की शुरुआत हो गई है।

मौसम विभाग के मुताबिक मानसून अब केरल और माहे के अलावा लक्षद्वीप, अरब सागर के कुछ हिस्सों, तमिलनाडु, कर्नाटक और बंगाल की खाड़ी के कई क्षेत्रों तक भी आगे बढ़ चुका है। आने वाले दिनों में इसके और

### मघ्र में 15 जून तक आ सकता है मानसून

भोपाल। केरल में मानसून प्रवेश के साथ ही तेजी से आगे बढ़ रहा है। गोवा में मानसून का प्रवेश समय पर होने से अब मध्यप्रदेश में 15 जून तक पहुंच सकता है। पहले मौसम विभाग ने 20 से 22 जून तक मध्यप्रदेश में पहुंचने की संभावना बतायी थी। इस बीच प्रदेश में भी मानसून पूर्व की गतिविधियों से बारिश एवं तेज आंधी का दौर चालू है।

मौसम विभाग मानसून की गति को लेकर चिंतित है। आशंका व्यक्त की जा रही है कि इसके आगे बढ़ने के लिए बंगाल की खाड़ी में एक मजबूत मौसम प्रणाली की जरूरत होती है जो इस समय दूर-दूर तक नहीं दिख रहा। पूर्वी और मध्य भारत में इसके शीघ्रता से पहुंचने को लेकर असमंजस है। ऐसे में मध्य और प्रायद्वीप में मानसून अटक सकता है। हालांकि अभी अलनीनो उतना सक्रिय नहीं है।

आगे बढ़ने की संभावना है। स्थिति हो सकती है।

मौसम विभाग के मुताबिक, जून महीने में अल नीनो की स्थिति कमजोर रह सकती है, लेकिन सितंबर तक इसके मध्यम या मजबूत होने की संभावना है। यदि ऐसा होता है तो मानसून के अंतिम चरण में वर्षा प्रभावित हो सकती है। मौसम विभाग का कहना है कि मानसून धीरे-धीरे देश के अन्य हिस्सों में भी आगे बढ़ेगा।

## उन्नत कृषि महोत्सव से बदलेगा खेती का भविष्य: श्री चौहान

मध्य प्रदेश के 4 जिलों को बनाया जाएगा कृषि विकास का मॉडल

नई दिल्ली। रायसेन में आयोजित उन्नत कृषि महोत्सव के दौरान घोषित कृषि परिवर्तन अभियान को आगे बढ़ाते हुए केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने नई दिल्ली में एक उच्चस्तरीय बैठक की। इस बैठक में मध्य प्रदेश के रायसेन, विदिशा, सीहोर और देवास जिलों के लिए तैयार विशेष कृषि रोडमैप की समीक्षा और क्रियान्वयन रणनीति पर विस्तार से चर्चा की गई। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह पहल केवल सरकारी योजना नहीं, बल्कि किसानों की आय बढ़ाने, मिट्टी की सेहत सुधारने, जल संरक्षण और वैज्ञानिक खेती को बढ़ावा देने का एक ठोस मिशन है।

श्री चौहान ने कहा कि रायसेन, विदिशा, सीहोर और देवास को कृषि विकास के ऐसे



आदर्श मॉडल के रूप में विकसित किया जाएगा, जिसे बाद में पूरे देश में लागू किया जा सके। उन्होंने बताया कि उन्होंने स्वयं इन क्षेत्रों में खेतों की स्थिति का आकलन किया है, जहां भूजल स्तर में गिरावट, मिट्टी की उर्वरता में कमी और किसानों की आय में असंतुलन जैसी चुनौतियाँ सामने आई हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस पूरे रोडमैप की सफलता का सबसे बड़ा आधार किसान की शुद्ध आय में वृद्धि होगी। हर जिले में यह आकलन किया जाएगा कि वर्तमान आय क्या है और रोडमैप लागू होने के बाद उसमें कितना सुधार हुआ। श्री चौहान ने सभी स्तरों राष्ट्रीय, राज्य और

जिला पर गठित समितियों को निर्देश दिया कि केवल गठन पर्याप्त नहीं है, बल्कि वास्तविक परिणाम जमीन पर दिखने चाहिए। उन्होंने वन टीम वन टॉस्क के सिद्धांत पर जोर देते हुए कहा कि हर कार्य के लिए स्पष्ट रूप से तय होना चाहिए कि कौन, क्या और कब तक पूरा करेगा। किसानों के प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण के लिए केवीके नेटवर्क को सक्रिय भूमिका निभाने के निर्देश दिए गए हैं। इसके साथ ही भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान (भोपाल) और केंद्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान (भोपाल) जैसे संस्थानों को भी इस मिशन से जोड़ा जाएगा।

## कम वर्षा की संभावना के बीच केंद्र ने तेज की तैयारियां

केंद्रीय कृषि मंत्री ने राज्यों को दिये विशेष निगरानी के निर्देश

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने संभावित अल नीनो प्रभाव, दक्षिण-पश्चिम मानसून, जल उपलब्धता, बीज व्यवस्था और राज्यों की तैयारियों की समीक्षा करते हुए स्पष्ट कहा कि किसानों के हित सर्वोच्च हैं और किसी भी प्रतिकूल मौसमीय स्थिति से निपटने के लिए केंद्र सरकार पूरी तरह सतर्क है। उन्होंने कहा कि किसानों को घबराने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि समय रहते तैयारी और वैज्ञानिक प्रबंधन के माध्यम से चुनौतियों का प्रभाव कम किया जाएगा। कृषि भवन, नई दिल्ली में आयोजित उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक में श्री चौहान ने संबंधित विभागों और राज्य सरकारों को निर्देश दिए कि वे पूर्ण समन्वय के साथ कार्य करें ताकि किसानों



को समय पर सलाह, उपयुक्त बीज, वैकल्पिक फसल विकल्प, नमी संरक्षण और जल प्रबंधन संबंधी सहायता उपलब्ध कराई जा सके।

बैठक में भारतीय मौसम विज्ञान विभाग द्वारा वर्ष 2026 के दक्षिण-पश्चिम मानसून के सामान्य से कम रहने तथा दीर्घकालिक औसत का लगभग 90 प्रतिशत वर्षा होने की संभावना का उल्लेख किया गया। साथ ही मानसून के दौरान अल नीनो की स्थिति

# आरएमपीसीएल द्वारा सोयाबीन उत्पादक प्रगतिशील कृषक पैनल संगोष्ठी का आयोजन

( धमेन्द्र सिंह राजपूत )

इंदौर। उर्वरक उद्योग की प्रमुख कंपनी आरएमपीसीएल ने मध्यप्रदेश के सोयाबीन उत्पादक प्रगतिशील किसानों का एक पैनल गठित किया है। यह पैनल किसानों को सोयाबीन की खेती में आ रही समस्याओं के ऊपर विचार-विमर्श करके उन्नत तरीकों से अवगत करायेगा। पैनल की पहली बैठक इंदौर में कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री विनीत जैन एवं डायरेक्टर डिजिटल मार्केटिंग साक्षी जैन की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस बैठक में प्रदेश के प्रमुख 15 सोयाबीन प्रगतिशील उत्पादक किसान शामिल हुए जिन्होंने पैनल के समक्ष अपने विचार व्यक्त किया। सोयाबीन उत्पादक प्रगतिशील कृषक पैनल संगोष्ठी में आरएमपीसीएल के सीनियर जनरल मैनेजर एवं हेड एग्रोनॉमिस्ट श्री प्रमोद कुमार पाण्डेय, सीनियर जीएम सेल्स श्री नीरज शर्मा, बिजनेस हेड श्री एम.पी. चौहान एवं गिरिराज कुशवाह एग्रोनॉमिस्ट विशेष रूप से उपस्थित थे।



देवास जिले के प्रगतिशील युवा कृषक एवं कृषक दूत के देवास जिला संवाददाता श्री धर्मेन्द्र सिंह राजपूत को सम्मानित करते हुए आर एम पी सी एल के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री विनीत जैन।



## कैसे होगी सोयाबीन की खेती फायदेमंद?

आरएमपीसीएल सोयाबीन उत्पादक प्रगतिशील कृषक पैनल संगोष्ठी में निष्कर्ष निकला कि यदि किसान भाई सोयाबीन की खेती आधुनिक तरीकों से करें तो सोयाबीन की फसल को लाभकारी बनाया जा सकता है।

- 4 से 5 इंच बारिश होने पर 15 जून से 30 जून तक सोयाबीन की बुवाई अवश्य करें। बारिश की देरी होने पर 10 जुलाई तक बोनी की जा सकती है।
- बुवाई पूर्व 2 ग्राम थाइरम एवं 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति किलो ग्राम की दर से बीच उपचार अवश्य करें।
- सोयाबीन की बुवाई रेज फरो (मेडू नाली पद्धति) से करें। 90 प्रतिशत अंकुरण क्षमता वाला 30 से 35 किलो स्वस्थ बीज प्रति एकड़ उपयोग करें।
- बुवाई के दौरान 26 किलोग्राम पोटाश प्रति एकड़ आधार खाद के रूप में जरूर दें। यूरिया 18 किलो प्रति एकड़ अनशंसित है।
- सही बीज चुनाव, बीज उपचार, उचित बीज दर, अनुशंसित उर्वरकों की मात्रा एवं खरपतवारनाशकों के प्रयोग से सोयाबीन का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

## सोयाबीन उत्पादन बढ़ाने के प्रति आरएमपीसीएल प्रतिबद्ध : विनीत जैन

पैनल मीट को संबोधित करते हुए आरएमपीसीएल के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री विनीत जैन ने बताया कि प्रदेश में सोयाबीन उत्पादन लगातार घट रहा है जो कि अत्यधिक चिंतनीय है। सोयाबीन उत्पादक क्षेत्रों की मिट्टी में पोषक तत्वों का बेहद अभाव पाया गया है जो सोयाबीन उत्पादन कम होने का प्रमुख कारण है। पिछले पांच वर्षों के दौरान कंपनी का प्रमुख उत्पाद 'महावीरा जिरोन पावर प्लस' पोषक तत्वों से भरपूर अनाज उत्पादन में खरा उतरा है। जिन किसानों ने छः पोषक तत्वों से भरपूर 'महावीरा जिरोन पावर प्लस' का उपयोग किया है उन्हें सोयाबीन से भरपूर उत्पादन मिल रहा है। श्री जैन ने कहा कि सोयाबीन उत्पादन बढ़ाने के प्रति आरएमपीसीएल प्रतिबद्ध है। श्री जैन ने बताया कि किसान सामान्यतः सभी फसलों में यूरिया एवं डीएपी का प्रयोग करते हैं। इस वजह से मिट्टी की सतह दिनों-दिन सख्त होती जा रही है। जमीन को उपजाऊ बनाने एवं पोषणयुक्त अनाज पैदा करने के लिये माइक्रोन्यूट्रिएंट्स की अत्यंत आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि वैश्विक स्तर पर जहां माइक्रोन्यूट्रिएंट्स का उपयोग 4 किलोग्राम प्रति एकड़ है वहीं भारत में मात्र 800 ग्राम प्रति एकड़ उपयोग हो रहा है। कंपनी महावीरा जिरोन पावर प्लस के माध्यम से देश के प्रत्येक किसान तक पोषक तत्व प्रबंधन की तकनीक पहुंचाना चाहती है।



पोषक तत्वों की आपूर्ति के लिए 'महावीरा जिरोन पावर प्लस' तीन बैग प्रति एकड़ बुवाई के समय अवश्य प्रयोग करें। किसी भी तरह की समस्या आने पर आरएमपीसीएल के कस्टमर केयर नं. 8956926412 पर संपर्क किया जा सकता है।

## सोयाबीन उत्पादन बढ़ाने में पोषक तत्व प्रबंधन महत्वपूर्ण : श्री पाण्डेय

कंपनी के सीनियर जनरल मैनेजर एवं हेड एग्रोनॉमिस्ट श्री प्रमोद कुमार पाण्डेय ने बताया कि सोयाबीन का उत्पादन जिन कारणों से कम हो रहा है कंपनी ने उस पर गहन अनुसंधान किसानों से मिलकर एवं खेतों पर जाकर किया है। सोयाबीन उत्पादन घटने का प्रमुख कारण कीट-रोगों का प्रकोप, भूमि में आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्वों का असंतुलन, भूमि में कार्बनिक पदार्थों की कमी, समुचित जल प्रबंधन का अभाव, खरपतवार की समस्या एवं मौसम की प्रतिकूलता है। श्री पाण्डेय ने बताया कि इन सब समस्याओं का एक ही समाधान है। सोयाबीन की खेती में उन्नत तरीके का अपनाया जाना। इसमें प्रमुख रूप से उन्नत किस्मों का चुनाव, समय पर बुवाई, बीज उपचार एवं पोटाश का उपयोग आवश्यक है। उन्होंने बताया कि पोषक तत्व प्रबंधन के लिए सबसे उपयुक्त खाद 'महावीरा जिरोन पावर प्लस' है। तीन बोरी प्रति एकड़ बुवाई के दौरान उपयोग करके सोयाबीन का उत्पादन 8 से 10 क्विंटल प्रति एकड़ आसानी से पाया जा सकता है। कंपनी के हेड एग्रोनॉमिस्ट श्री प्रमोद कुमार पाण्डेय ने बताया कि 'महावीरा जिरोन पावर प्लस' में उपलब्ध फास्फोरस, कैल्शियम, सल्फर, जिंक, बोरॉन एवं मैग्नीशियम चमकदार एवं एक समान दाने का सोयाबीन उत्पादन करने में सक्षम हैं।



## कृषि विकास में डिजिटल प्लेटफॉर्म महत्वपूर्ण : साक्षी जैन

कंपनी डायरेक्टर डिजिटल मार्केटिंग साक्षी जैन ने बताया कि वर्ष 2021 में कोविड के दौरान किसानों से संवाद करने के लिये डिजिटल प्लेटफॉर्म चुना। खेती-किसानी के बगैर किसी पारिवारिक पृष्ठभूमि के किसानों से सतत लगाव एवं निरंतरता रंग लायी जब देश के करोड़ों किसान आरएमपीसीएल के फेसबुक एवं इंस्टाग्राम के माध्यम से कंपनी से जुड़े। साक्षी जैन ने बताया कि दिन की शुरुआत किसानों से बात करके ही होती है। अब उन्हें खेती-किसानी एवं देश का किसान सबसे अच्छा लगता है। किसानों से निरंतर संवाद करके उनकी समस्याओं को जानकर समाधान करने में आनंद आता है। उन्होंने बताया कि महावीरा जिरोन से उत्पादित अनाज पोषणयुक्त तो है ही साथ ही उसके फसल अवशेष जो पशुओं को खिलाये जाते हैं वह भी पोषणयुक्त हैं।



पैनल में उपस्थित किसानों ने बताया कि सोयाबीन की खेती में कई तरह की समस्याएँ आ रही हैं। यलो मोजेक वायरस, चारकोल जड़ सड़न, झुलसा एवं नये कीटों जैसे तने की मक्खी, तना छेदक कीट, अर्ध कुंडलक इल्ली, कम्बल कीट, तम्बाखू की इल्ली, चने की इल्ली, पत्ती भक्षक कीट एवं सफेद मक्खी से सर्वाधिक नुकसान होता है। इसके अलावा खरपतवार एवं अफलन जैसी समस्याएँ सोयाबीन का उत्पादन घटाने के प्रमुख कारक हैं। मौसम की प्रतिकूलता जिसमें क्रांतिक अवस्थाओं में वर्षा का होना सोयाबीन उत्पादन प्रभावित करते हैं। उत्पादन लागत दिनों-दिन बढ़ने से सोयाबीन की खेती में लगातार घाटा हो रहा है।

इन सब समस्याओं का समाधान पैनल मीट में कंपनी के विशेषज्ञों एवं किसानों ने मिलकर सुझाया। पैनल मीट में शामिल सभी सोयाबीन उत्पादक प्रगतिशील किसानों को शाल-श्रीफल से सम्मानित किया गया। पैनल मीट में उपस्थित देवास जिले के प्रगतिशील युवा कृषक श्री धर्मेन्द्र सिंह राजपूत ने सोयाबीन की बुवाई मेडू नाली पद्धति से करने एवं सल्फर युक्त उर्वरकों का उपयोग करने की सलाह दी। इंदौर जिले के प्रगतिशील किसान श्री जीवन सिंह, महिला कृषक देवास जिले की आरती रलोती एवं विमल नागर ने भी अपने सुझाव साझा किये।

## साप्ताहिक सुविचार

खुद पर विजय प्राप्त करना लाखों शत्रुओं पर विजय पाने से बेहतर है।  
- भगवान महावीर

### चिंताजनक है कम बारिश का अनुमान

भारतीय मौसम विभाग ने वर्ष 2026 के मानसून को लेकर दूसरा पूर्वानुमान जो बताया है वह सभी के लिए चिंतनीय है। मौसम विभाग ने अपने पहले मौसम पूर्वानुमान में देश भर में 92 प्रतिशत बारिश का अनुमान बताया था। इसमें 8 प्रतिशत औसत वर्षा में कमी का अनुमान लगाया था। हाल ही में दूसरे मानसून पूर्वानुमान में 10 प्रतिशत कमी का अंदेश बताया है। मौसम विभाग ने कहा कि इसमें 4 प्रतिशत वृद्धि या कमी संभावित है। मौसम विभाग के पूर्व अनुमान से यह स्पष्ट है कि इस साल मानसूनी बारिश में अलनीनो की काली छाया स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रही है। जून से लेकर सितंबर तक हर माह



कम बारिश का अनुमान है। सामान्यतः मानसून

एक जून तक हर साल केरल में प्रवेश के साथ देश में मानसूनी गतिविधियों का आगाज होता है। इस वर्ष 4-5 जून तक केरल में मानसून आगमन की उम्मीद है।

मानसूनी बारिश का कम या अधिक होना खेती के ऊपर पूरी तरह असरकारक रहता है। देश में 60 प्रतिशत से अधिक वर्षा आश्रित क्षेत्र हैं जहां पर मुख्य खरीफ की फसलें ली जाती हैं। सोयाबीन, धान, मक्का, कपास, तिल, मूंग, उड़द, अरहर, ज्वार एवं बाजरा ऐसी फसलें हैं जो बिना पानी के असंभव हैं। कम बारिश का सीधा असर इन फसलों के उत्पादन पर पड़ना तय है। इसके अलावा यदि बरसात के मौसम में पर्याप्त बारिश नहीं हुई तो इसका विपरीत असर रबी की फसलों पर भी पड़ना तय है। वर्तमान में देश के अधिकांश जलाशय 70 से 80 प्रतिशत तक खाली हो चुके हैं। इन जलाशयों को भरने के लिए देश में सामान्य वर्षा की अत्यधिक दरकार है। पर्याप्त बारिश नहीं होने से जमीन के अंदर का भूजल स्रोत भी रिचार्ज नहीं हो पायेगा। इसमें पीने के पानी का संकट भी गहरा सकता है।

ऐसा नहीं है कि सामान्य से कम बारिश पहली बार अनुमानित है। इसके पहले कई बार ऐसा हुआ है कि देश में सूखे जैसे हालात बने हैं। तब भी देश ने इससे मुकाबला किया है और आगे भी करेगा। 10 प्रतिशत कम बारिश का अनुमान देश के नीति निर्धारकों, उद्योग एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए आत्म मंथन एवं विश्लेषण का अवसर है। देश की 60 प्रतिशत से अधिक आबादी कृषि क्षेत्र पर निर्भर है। इसके लिए मानसूनी बारिश अमृत समान है। ऐसी विपरीत परिस्थिति में सरकार का यह दायित्व है कि आकस्मिक कार्ययोजना की रूपरेखा अभी से तैयार होना चाहिए। किसानों को कम पानी वाली दहलनी एवं तिलहनी फसलें बोने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इन फसलों का बीज किसानों तक पहुंचाना चाहिए। धान जैसी अधिक पानी वाली फसलें कम से कम बोने की सलाह दी जानी चाहिए। मौसम विभाग तीसरा अनुमान जून अंत तक जारी करेगा जिसमें सब स्पष्ट हो जायेगा।

## एनपीके एवं पोटैश उर्वरकों के दाम में वृद्धि

यूरिया, डीएपी के दाम यथावत, एसएसपी 100 रुपये महंगी

( विशेष प्रतिनिधि )

भोपाल-राज्य सरकार ने कृषक कल्याण वर्ष के दौरान किसानों को जोर का झटका, धीरे से दिया है। एनपीके एवं पोटैश उर्वरकों के दाम में रुपये 550 एवं 175 रुपये बैग की वृद्धि कर दी गई है। वहीं खरीफ सीजन में सबसे अधिक उपयोग होने वाले सिंगल सुपरफास्फेट के दाम में 100 रुपये प्रति बोरी बढ़ाया गया है। जिस पोषक तत्व आधारित एनपीके को बढ़ावा देने की बात सरकार कर रही है, उसी एनपीके का दाम सबसे अधिक 550 रुपये प्रति बोरी बढ़ाकर 2450 रुपये कर दिया गया है।

विगत दिनों मध्य प्रदेश राज्य सहकारी विपणन संघ (मार्कफेड) में संपन्न उर्वरक समन्वय समिति की बैठक में उक्ताशय का निर्णय लिया गया। लिये गए निर्णय अनुसार खरीफ 2026 के लिये यूरिया एवं डीएपी की दरों को यथावत रखा गया है। पहली बार जिंक कोटेड बोरोनेटेड (दानेदार) और मैग्नीशियम, जिंक एवं बोरोन युक्त दो एसएसपी को उर्वरकों की सूची में शामिल किया गया है। काम्प्लेक्स उर्वरकों की कीमतें 130 रुपये से लेकर

क्र.	नाम उर्वरक	खरीफ 26 की दरें	वृद्धि प्रति बैग
01	डाई अमोनियम फास्फेट	1350	-
02	टी एस पी	1300	-
03	यूरिया (नीम कोटेड)	266.50	-
04	पोटैश	1975	175
05	एन.पी.के. (12:32:16)	2450	550
06	इंडोरामा एन.पी.के. (10:26:26)	1990	-
07	एन.पी.के. (10:26:26)	2450	550
08	ए.पी.एस. (20:20:0:13)	1400	-
09	ए.पी.एस. (20:20:0:13)	1450	-
10	एन.पी.के. (10:20:0:13)	1400	-
11	एन.पी.के. (14:35:14)	1900	-
12	एन.पी.के. (15:15:15)	2000	350
13	एन.पी.के. (16:16:16)	2050	375
14	एन.पी.के. (20:20:0)	1400	-
15	यूरिया एस.एस.पी. (5:15:0:10)	830	130
16	अमोनियम सल्फेट	1400	450
17	एन.पी.के. (24:24:0)	2300	-
18	एन.पी.के. (19:19:19)	2400	-
19	एस एस पी (पावडर)	565	100
20	एस एस पी (दानेदार)	605	100
21	बोरोनेटेड एसएसपी (पावडर)	595	100
22	बोरोनेटेड एसएसपी (दानेदार)	635	100
23	जिंक युक्त एसएसपी (पावडर)	590	100
24	जिंक युक्त एसएसपी (दानेदार)	630	100
25	जिंकटेड बोरोनेटेड एसएसपी (दानेदार)	660	-
26	मैग्नीशियम जिंक, बोरोन एसएसपी (दानेदार)	675	-

भाव-रुपये प्रति बोरी, वजन 50 किलो।

550 रुपये प्रति बैग बढ़ाया गया है। स्मानीय है कि यूरिया (45 किलो) को छोड़कर सभी उर्वरकों की

पैकिंग 50 किलो के बैग में आती है। मार्क फेड द्वारा घोषित उर्वरकों की नवीन दरें निम्नानुसार हैं।

## कृषक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

रायसेन। कृषि विज्ञान केंद्र, रायसेन एवं दलहन विकास निदेशालय, भोपाल के संयुक्त तत्वाधान में रायसेन जिले के विकासखंड गैरतगंज के ग्राम पाठाखेड़ा एवं गुलाब जमुनिया में खेत बचाओ अभियान अंतर्गत कृषक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र, रायसेन के रंजीत सिंह राघव, डॉ. ब्रह्मानंद शुक्ला एवं दलहन विकास निदेशालय कार्यालय से डॉ. ए.के. शिवहरे, संयुक्त निदेशक डॉ. राम नारायण तकनीकी अधिकारी, डॉ. सोमेश वाजपेई तकनीकी अधिकारी प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

इस मौके पर डॉ. शिवहरे ने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य मिट्टी की सेहत में सुधार करना, उत्पादन लागत में कमी, कृषकों को संतुलित मात्रा में मिट्टी की जांच के आधार पर उर्वरकों का उपयोग करना एवं किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, फसल बीमा योजना व केसीसी योजनाओं से जोड़ना है। खरीफ दलहनी फसलों उड़द की उन्नत किस्म आईपीयू-13-01, आईपीयू-10-26, आईपीयू-17-01, मूंग की आईपीएम-205.7, शिखा व अरहर की उन्नत किस्म आईपीए-15-06, राजेश्वरी, राजीव लोचन आदि की जानकारी दी।

## सूचना दाता प्रोत्साहन योजना शुरू

नर्मदापुरम। किसानों के हितों की रक्षा तथा गुणवत्तापूर्ण उर्वरकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से मध्य प्रदेश शासन ने पूरे प्रदेश में सूचना दाता प्रोत्साहन योजना लागू की है। इस योजना के तहत खाद की कालाबाजारी, अवैध भंडारण, नकली या मिलावटी खाद की बिक्री तथा यूरिया के अवैध औद्योगिक उपयोग की सूचना देने वाले व्यक्तियों को 1000 रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी।

उप संचालक कृषि डॉ. रविकांत सिंह ने बताया कि योजना के अंतर्गत राज्य एवं जिले का कोई भी नागरिक, किसान या व्यापारी शिकायत दर्ज करा सकता है। यदि सूचना सही पाई जाती है और



विभागीय जांच में सामग्री जब्त होने अथवा दोष सिद्ध होने की पुष्टि होती है, तो सूचना देने वाले व्यक्ति के बैंक खाते में सीधे 1000 रुपये की राशि हस्तांतरित की जाएगी। उन्होंने बताया कि शिकायतकर्ता की पहचान पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी और किसी भी स्तर पर उसका नाम सार्वजनिक नहीं किया जाएगा। यह योजना 20 मई 2026 से 30 सितंबर 2026 तक प्रभावी रहेगी।

## अनमोल वचन

शंका विनाश का कारण है, शंका करने से बने बनाए काम बिगड़ते हैं, शंका से शंका बढ़ती है।  
- प्रेमचन्द्र

## पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

अधिमासज्येष्ठ कृष्ण/ज्येष्ठ शुक्ल विक्रम संवत् 2083 ईस्वी सन् 2026

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
9 जून 26	मंगलवार	अधिमास ज्येष्ठ कृष्ण-9	पंचक
10 जून 26	बुधवार	अधिमास ज्येष्ठ कृष्ण-10	पंचक रात 4.1 तक
11 जून 26	गुरुवार	अधिमास ज्येष्ठ कृष्ण-11	कमला एकादशी
12 जून 26	शुक्रवार	अधिमास ज्येष्ठ कृष्ण-12	प्रदोष व्रत
13 जून 26	शनिवार	अधिमास ज्येष्ठ कृष्ण-13	
14 जून 26	रविवार	अधिमास ज्येष्ठ कृष्ण-14	
15 जून 26	सोमवार	अधिमास ज्येष्ठ कृष्ण-30	सोमवती अमावस्या
16 जून 26	मंगलवार	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-1-2	
17 जून 26	बुधवार	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-3	
18 जून 26	गुरुवार	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-4	
19 जून 26	शुक्रवार	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-5	
20 जून 26	शनिवार	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-6	
21 जून 26	रविवार	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-7	
22 जून 26	सोमवार	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-8	

डॉ. शुभम मिश्रा  
फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर  
उच्च शिक्षा एवं उत्कृष्टता संस्थान,  
भोपाल (म.प्र.)

# स्वस्थ फसल की पहली सीढ़ी है बीजोपचार

## सोयाबीन बीजोपचार की वैज्ञानिक विधि

**सो** याबीन भारत की प्रमुख तिलहनी फसलों में से एक है। मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान तथा अन्य राज्यों में इसकी बड़े पैमाने पर खेती की जाती है। सोयाबीन की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए उन्नत किस्मों का चयन, संतुलित पोषण, समय पर बुवाई तथा खरपतवार एवं कीट-रोग प्रबंधन जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण है बुवाई से पूर्व बीजोपचार करना।

प्रक्रिया को बीजोपचार कहा जाता है। इसका उद्देश्य बीज एवं नवजात पौधों को रोगों, कीटों तथा प्रतिकूल परिस्थितियों से बचाना तथा उनकी वृद्धि को प्रोत्साहित करना होता है।

### बीजोपचार के प्रमुख लाभ

- 1. अंकुरण क्षमता में वृद्धि:** उपचारित बीजों का अंकुरण सामान्य बीजों की अपेक्षा अधिक एवं एक समान होता है। इससे खेत में पौधों की उचित संख्या बनी रहती है।
- 2. रोगों से सुरक्षा:** सोयाबीन में जड़ गलन, तना सड़न, कॉलर रॉट, चारकोल रॉट तथा अन्य बीजजनित रोग प्रारंभिक अवस्था में अधिक नुकसान पहुंचाते हैं। बीजोपचार इन रोगों के प्रकोप को कम करता है।
- 3. कीटों से बचाव:** तना मक्खी, दीमक तथा अन्य प्रारंभिक कीट अंकुरित पौधों को नुकसान पहुंचाते हैं। बीजोपचार के माध्यम से इनका नियंत्रण संभव है।
- 4. पोषक तत्वों की उपलब्धता:** जैव उर्वरकों के प्रयोग से पौधों को नत्रजन एवं फास्फोरस जैसे आवश्यक पोषक तत्व अधिक मात्रा में उपलब्ध होते हैं।
- 5. उत्पादन में वृद्धि:** बीजोपचार से पौधों की वृद्धि बेहतर होती है, फलस्वरूप फसल की उत्पादकता तथा आय में वृद्धि होती है।

### सोयाबीन में बीजोपचार की वैज्ञानिक विधि

**फफूंदनाशी उपचार:** बीजों को फफूंदजनित रोगों से बचाने के लिए सबसे पहले फफूंदनाशी दवा का प्रयोग किया जाता है।

### अनुशंसित मात्रा

- ▶ कार्बेन्डाजिम+मैनकोजेब - 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज अथवा
  - ▶ कार्बोक्सिन + थायरम - 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज
- जैविक खेती करने वाले किसान ट्राइकोडर्मा का



उपयोग 8 से 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से कर सकते हैं।

**कीटनाशी उपचार:** फफूंदनाशी उपचार के बाद बीजों को कीटनाशी दवा से उपचारित किया जाता है।

### अनुशंसित मात्रा

- ▶ थायमेथोक्साम-10 मिलीलीटर प्रति किलोग्राम बीज अथवा
- ▶ इमिडाक्लोप्रिड -1.25 मिलीलीटर प्रति किलोग्राम बीज

यह उपचार तना मक्खी एवं अन्य प्रारंभिक कीटों से सुरक्षा प्रदान करता है।

**जैव उर्वरक उपचार:** रासायनिक उपचार पूर्ण होने के बाद बीजों पर जैव उर्वरकों का लेप किया जाता है।

### अनुशंसित मात्रा

- ▶ राइजोबियम कल्चर - 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज
- ▶ फास्फोरस घुलनशील जीवाणु कल्चर - 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज

राइजोबियम पौधों की जड़ों में गांठें बनाकर वायुमंडलीय नत्रजन को स्थिर करता है, जबकि फास्फोरस घुलनशील जीवाणु मिट्टी में उपलब्ध फास्फोरस को पौधों के लिए उपयोगी बनाते हैं।

### बीजोपचार की चरणबद्ध प्रक्रिया

1. स्वच्छ एवं स्वस्थ बीजों का चयन करें।
2. बीजों को साफ तिरपाल या प्लास्टिक शीट पर फैलाएँ।
3. पहले फफूंदनाशी दवा निर्धारित मात्रा में मिलाएँ।
4. बीजों को छाया में सुखाएँ।
5. इसके बाद कीटनाशी दवा से उपचार करें।
6. पुनः छाया में सुखाएँ।
7. अंत में राइजोबियम एवं फास्फोरस घुलनशील जीवाणु कल्चर का लेप करें।
8. उपचारित बीजों को धूप में न सुखाएँ।
9. उपचार के 24 घंटे के भीतर बुवाई कर दें।

### बीजोपचार करते समय सावधानियाँ

- ▶ केवल प्रमाणित एवं स्वस्थ बीजों का ही उपयोग करें।
- ▶ अनुशंसित मात्रा से अधिक दवा का प्रयोग न करें।
- ▶ उपचारित बीजों को पशुओं एवं बच्चों की पहुंच से दूर रखें।
- ▶ दवा मिलाते समय हाथों में दस्ताने तथा चेहरे पर मास्क का उपयोग करें।
- ▶ जैव उर्वरकों को हमेशा अंत में लगाएँ।
- ▶ उपचारित बीजों को प्रत्यक्ष सूर्य प्रकाश में न रखें।
- ▶ बुवाई में अनावश्यक विलंब न करें।

**जैविक खेती में बीजोपचार:** जैविक खेती में रासायनिक दवाओं के स्थान पर जैविक उत्पादों का प्रयोग किया जाता है।

### अनुशंसित जैविक उपचार

- ▶ ट्राइकोडर्मा - 8 से 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज
- ▶ राइजोबियम कल्चर - 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज
- ▶ फास्फोरस घुलनशील जीवाणु कल्चर - 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज

यह विधि पर्यावरण के अनुकूल होने के साथ-साथ मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने में भी सहायक है।

## हरी खाद भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाये

**टीकमगढ़।** कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़ के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बी.एस. किरार तथा केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. आर.के. प्रजापति, डॉ. एस.के. सिंह, डॉ. एस.के. जाटव, डॉ. आई.डी. सिंह द्वारा कृषकों को हरी खाद बनाकर भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने की सलाह दी गयी। हरी खाद की यह तकनीक मृदा की उर्वरता बढ़ाने का सस्ता प्रभावी एवं पर्यावरण अनुकूल उपाय है। वर्तमान समय में रासायनिक उर्वरकों के बढ़ते उपयोग से मृदा की गुणवत्ता में गिरावट आ रही है इसलिए हरी खाद एक टिकाऊ विकल्प के रूप में उभर रही है।

हरी खाद बनाने के लिये सनई, ढैंचा, मूंग, उड़द एवं लोबिया फसलों की जून के प्रथम सप्ताह में बुवाई की जाती है। हरी खाद की खेती के लिए सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था होना चाहिए। हरी खाद में विभिन्न प्रकार के पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं तथा कार्बनिक पदार्थ भी भूमि को पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते हैं। हरी खाद से खेत की मिट्टी भुरभुरी होने से उसकी जल धारण क्षमता बढ़ जाती है साथ ही नींदा एवं कीट व्याधियों का भी उचित प्रबंधन हो जाता है। इस प्रकार से खेतों की लागत में कमी आयेगी और उत्पादन गुणवत्तापूर्ण एवं स्वादिष्ट होगा और रासायनिक खादों की मात्रा में कमी आयेगी। साथ ही अनाज, दालों, सब्जियों एवं फलों पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभाव में भी कमी आयेगी। जिससे मानव के शरीर में पनपने वाली बहुत सी बीमारियों में भी कमी आयेगी।

## नई पीढी के उर्वरक

**सम्पूर्ण**

Registered Office: 21-22, 2nd Floor, Panna Power House, Panna Power Internal Ring, Narraon Point, Morena - 480021.  
 Email: [pannagroup@pannagroup.co.in](mailto:pannagroup@pannagroup.co.in) • Contact No: 74 6083 6083

● डॉ. आशीष श्रीवास्तव  
कृषि महाविद्यालय, गंजबासौदा (म.प्र.)

**बी**ज प्रत्येक फसल की आधारशिला है जिसके ऊपर बोयी गई फसल की अच्छी पैदावार निर्भर करती है। यदि बुआई के लिए उपयोग किया जाने वाला बीज स्वस्थ व निरोगी है तो बीजों का अंकुरण अच्छा होगा व पौधे निश्चित ही स्वस्थ होंगे।

बीजोपचार का मुख्य उद्देश्य बीज में लगने वाले रोगजनक या बीज के अंदर जीवित कोशिकाओं को संक्रमित करना या फिर अंकुरण के समय भूमि में फफूंद द्वारा बीज पर आक्रमण को रोकना है। मध्यप्रदेश में रबी मौसम में प्रमुख रूप से गेहूँ, चना, मसूर, मटर आदि फसलों की खेती की जाती है। पिछले कुछ वर्षों से मध्यप्रदेश में दलहनी फसलों के क्षेत्रफल में गिरावट आ रही है। इसका प्रमुख कारण मृदा व बीज जनित रोगों के प्रभावी प्रबंधन के उपाय न होना है। बीजोपचार मृदा व बीज जनित रोगों के प्रबंधन में काफी कारगर साबित हुआ है।

बीजोपचार से प्रारंभिक अवस्था में होने वाली बीमारियों से बचाव आसानी से किया जा सकता है। जिसके प्रति किसानों को जागरूक होना होगा। बीजोपचार करने से बीजों से उत्पन्न होने वाली बीमारियों से फसलों की सुरक्षा की जा सकती है। बीज के ऊपर सुरक्षा आवरण से मृदा, बीज व अन्य जीवों से सुरक्षा होती है। बीज अंकुरण बढ़ने से अंकुरण के औसत में सुधार से बीज की मात्रा कम लगती है। मृदा जन्य रोगों का प्रकोप कम होता है एवं अंकुरण का प्रतिष्ठ अधिक होता है।

#### बीजोपचार के तरीके

**भौतिक विधि से उपचार:** इस विधि के अंतर्गत गर्म पानी, सूर्य ऊर्जा तथा विकिरणों द्वारा बीजोपचार किया जाता है। बीज के अंदर रहने वाले रोगजनकों जैसे गेहूँ के कण्डवा रोग के लिए सूर्य के ताप से बीजों को उपचारित करते हैं। इसके लिए बीज को 4 घंटे पानी में भिगोने के बाद दोपहर मई की गर्मी में पक्के फर्श या टीन पर पतली तह में डालकर सुखाते हैं।

रोग प्रथक्करण विधि से भी बीज या पौध अवशेषों को बीज से अलग करके नष्ट करते हैं। इसके लिए बीज को 0.5 प्रतिशत नमक के घोल में डुबोते हैं जिससे रोगी बीज ऊपर तैरकर आ जाते हैं। इनको बाहर निकाल कर नष्ट कर देते हैं और शेष बीजों को साफ पानी से धोकर, सुखाकर बोने के काम में लेते हैं। यह विधि गेहूँ के सेहूँ रोग एवं ज्वार, बाजरा के अर्गट रोग को रोकने में सहायक होती है। विकिरण विधि से विभिन्न तीव्रता की अल्ट्रावायलेट किरणों को अलग-अलग समय पर बीजों पर से गुजारा जाता है जिससे बीज की सतह या उसके अंदर पाये जाने वाले रोगजनक नष्ट हो जाते हैं।

**रासायनिक विधि से बीजोपचार:** इस विधि से बीज को फफूंदनाशक रसायनों द्वारा उपचारित किया जाता है। यह विधि मृदा एवं बीज जनित रोगों की रोकथाम की सबसे आसान, सस्ती और लाभकारी विधि है। फफूंदनाशी रसायन बीज एवं मृदा जनित हानिकारक रोगजनकों को मार डालता है अथवा उन्हें फैलने से रोकता है। यह एक संरक्षण कवच के रूप में बीज के चारों ओर घेरा बना लेता है। जिससे बीज को रोगजनक के आक्रमण एवं सड़ने से रोका जा सकता है। इस विधि में आवश्यकतानुसार स्वच्छ व स्वस्थ बीज को लेकर फफूंदनाशक दवा की अनुशंसित मात्रा मिलाते हैं। बीज की अधिक मात्रा होने पर बीजोपचार यंत्र का उपयोग करते हैं तथा बीज की मात्रा कम होने पर बीज व दवा दोनों को मटका या प्लास्टिक की बोरी में डालकर 10 से 15 मिनट तक हिलाते हैं। जिससे फफूंदनाशक दवा की परत बीजों पर चढ़ जाये।

तत्पश्चात उपचारित बीज को छाया व हवादार जगह में सुखाकर बुआई करते हैं। बीजोपचार के लिए उपर्युक्त फफूंदनाशक दवाओं में थाइरम, कार्बेन्डाजिम, कार्बक्सिन ट्राइकोडरमा व स्यूडोमोनास आदि का प्रयोग किया जाता है। जैविक फफूंदनाशकों द्वारा बीजोपचार मृदा जनित बीमारियों के प्रबंधन में कारगर पाया गया। जैविक फफूंदनाशकों में ट्राइकोडर्मा या स्यूडोमोनास की 5.0 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीज की दर से अथवा कार्बोक्सिन के बाद ट्राइकोडर्मा को मिलाकर बीजोपचार करने से उगरा व सूखा जड़ सड़न रोग का प्रबंधन



## बीजोपचार के पश्चात बुआई

## मिट्टी एवं बीज जनित रोगों से सुरक्षा

काफी असरकारक रहा है (5.0 ग्राम ट्राइकोडर्मा के साथ 2.0 ग्राम कार्बोक्सिन प्रति किलो बीज की दर से प्रयोग करें।)

#### बीजोपचार करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

- ▶ इस बात का विशेष ध्यान रखें कि यदि बीजोपचार के लिए फफूंदनाशक दवाओं के साथ-साथ कीटनाशक दवाओं का भी प्रयोग किया जा रहा है तो सर्वप्रथम बीज को फफूंदनाशक दवाओं से उपचारित करें तत्पश्चात कीटनाशक दवाओं का प्रयोग करें व अंत में राइजोबियम अथवा पी. एस. बी. कल्चर से बीजों को उपचारित करें।
- ▶ बीजों को बुआई से 24 से 48 घंटे पूर्व भी उपचारित किया जा सकता है। इन परिस्थितियों में विशेष ध्यान रखें कि उपचारित बीज में खाद उर्वरकों को मिलाकर न रखें।
- ▶ राइजोबियम अथवा पी.एस.बी. कल्चर आदि दवाओं को खरीदते समय ध्यान दें कि उसमें ढेले न हो। यदि हों तो बीजोपचार से पूर्व उन्हें बारीक अवश्य कर लेंवे अन्यथा

बोनी करते समय सीडड्रिल में फंसने की संभावना रहती है।

- ▶ बीजोपचार करते समय रासायनिक दवाओं को शरीर के संपर्क में आने से बचाने हेतु हाथ के दस्ताने व मुँह पर मास्क आदि का प्रयोग करें।
- ▶ बीजोपचार करते समय किसी भी प्रकार से धूम्रपान एवं खानपान की वस्तु का सेवन न करें।
- ▶ फफूंदनाशक दवाओं को खरीदते समय उनके पैकेट पर उनके बनने से लेकर प्रभावित रहने कि तिथि व विधि लिखी होती है। इसे देखकर ही प्रयोग करें।
- ▶ बुआई में प्रयोग होने वाले बीज को फफूंदनाशक से उपचारित करने के बाद खाद्यान एवं मवेशियों से दूर रखें।
- ▶ बिना पूर्व जानकारी के दवाओं का प्रयोग न करें।
- ▶ उपयोग किये जाने वाले फफूंदनाशक रसायन की मात्रा तथा उसके साथ सम्मिश्रित होने वाले अन्य रसायनों के संबंध में भी जानकारी होना आवश्यक है।

### अन्नदाता का साथ किसान का विकास



**अन्नदाता**  
जिकेटेड एन.पी.के. (20:20:00:13)  
सल्फर और जिंक की ताकत  
ज्यादा उपज और कम लागत



**अन्नदाता जिबो**  
अन्नदाता जिबो का वादा  
मिट्टी जानदार और उपज भी ज्यादा



अन्नदाता  
जिबो



अन्नदाता  
जिबो

उत्पादक: ओस्तवाल फॉस्केम (इंडिया) लिमिटेड (भीलवाड़ा)। कृष्णा फॉस्केम लिमिटेड (मेघनगर) मध्यभारत एग्रो प्रोडक्ट्स लिमिटेड (रजौवा एवं बण्डा - सागर)

- संदीप कुमार शर्मा
- डॉ. ब्रजेश कुमार तिवारी
- डॉ. अजय कुमार पांडेय  
जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)  
कृषि विज्ञान केंद्र, रीवा (म.प्र.)

**मृ मि का चुनाव: उड़द की खेती विभिन्न प्रकार की भूमि में होती है। हल्की रेतिली दोमट या मध्यम आकार की भूमि में जिसमें जल निकास अच्छा हो व जिस भूमि का पी.एच मान 7-8 के बीच होना चाहिए। अतः उड़द की खेती के लिये अम्लीय व क्षारीय भूमि उपयुक्त नहीं होती है।**



## उन्नत तरीके से करें उड़द की खेती

### उन्नत किस्में

किस्म का नाम	पकने की अवधि दिन	उपज किं./हे.	विशेषताएं
जवाहर-3	70-75	10-12	बीज मध्यम, छोटा हल्का काला, पौधा मध्यम आकार का होता है।
जवाहर-2	70-75	15-20	बीज मध्यम, छोटा हल्का काला, घनी रोये युक्त पौधा, कम फैलने वाला।
खरगोन-3	85-90	10-12	पौधा फैलने वाला बीज हल्का व काला होता है।
टी-9	70-80	10-12	बीज मध्यम छोटा, पौधा द्विफसलीय क्षेत्र हेतु उपयुक्त।
बसंत बहार-3	70-80	13-14	तना मोटा काला, ग्रीष्म मौसम की फसल के लिए उपयुक्त।
पंत यू-30	70-75	10-12	दाने काले मध्यम आकार के होते हैं।
टी.पी.यू-4	70-80	12-15	पौधा मध्यम ऊंचाई वाला होता है।
पी.यू.-19	70-80	12-15	पीला मौजेक निरोधी।

- **भूमि की तैयारी:** वर्षा प्रारम्भ होने के बाद दो तीन बार जुताई कर खेत को समतल कर लेना चाहिए। जिससे खेत के खरपतवार नष्ट हो जाते हैं व पौधों की बढ़वार अच्छी होती है।
- **बुवाई का समय:** मानसून के आगमन होने पर एक दो वर्षा होने के बाद जून के अंतिम सप्ताह में बुवाई करना लाभदायक होता है।
- **बीज की मात्रा:** 15-20 किग्रा. बीज एक हेक्टेयर भूमि के लिये पर्याप्त होता है।
- **बीज उपचार:** बीज को बुवाई से पहले फफूंदनाशक दवा से अवश्य उपचार करना चाहिए। वाविस्टीन या विटावैक्स, नामक दवा में से कोई एक 3 ग्राम दवा प्रति किलो बीज के साथ मिलाकर बीजोपचार हेतु प्रयोग करना चाहिए और इसके बाद राईजोबियम कल्चर वा टाईकोडर्मा विरडी नामक दवा एक किलो बीज में 5-5 ग्राम मिलाकर भी बीजोपचार करें।
- **खाद की मात्रा:** नत्रजन की 20 किलोग्राम व फास्फोरस 50 किलो ग्राम मान से सम्पूर्ण खाद की मात्रा बुवाई के समय कतारों में बीज के ठीक नीचे डालना चाहिए। दलहनी फसलों में गंधक युक्त

उर्वरक जैसे सिंगल सुपर फास्फेट, अमोनियम सल्फेट, जिप्सम आदि का उपयोग करना चाहिए। विशेषतः गंधक युक्त उर्वरकों से दें।  
भूमि में पोटाश की कमी होने पर 20 किलोग्राम पोटाश/हेक्टेयर बुवाई के समय देना चाहिए।  
► **सिंचाई प्रबंधन:** फसल के प्रारम्भिक 25-35 दिनों तक खरपतवार नियंत्रण बहुत ही आवश्यक होता है। अतः निदाई कर

खरपतवार नियंत्रण करें। अगर रासायनिक विधि से खरपतवारों को नियंत्रण करना चाहते हो तो बोनी के 15-20 दिन में इमेजाथापिर 1 लीटर प्रति हेक्टेयर 600-700 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए

### उड़द की फसल में कीटों का नियंत्रण

- **रस चूसने वाले कीट:** फुदका, माहो, सफेद मक्खी, थ्रिप्स आदि कीट पत्तियों की निचली सतह से रस चूसते हैं जिससे पत्तियां पीली होकर गिर जाती हैं। सफेद मक्खी मोजेक विषाणु रोग वाहक होती है। इसके नियंत्रण हेतु डायमैथियोट 30 ई.सी. 0.3 प्रतिशत इमीडाक्लोप्रिड 0.3 मिलि/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- **फली बीटल:** यह कीट भूरा व काला होता है, जो पत्तियों को कुतरकर गोल छिद्र बनाता है। जिससे पत्तियां छलनी हो जाती हैं। इसके नियंत्रण हेतु क्रिनालफॉस 1.5 प्रतिशत या क्लोरोपायरीफॉस 2 प्रतिशत डस्ट 20-25 किलो ग्राम/हेक्टेयर 15 दिन के अन्तर से दो बार खेत में भुरकाव करना चाहिए।
- **इल्लियां:** ये इल्लियां विभिन्न प्रकार की होती हैं जो भूरी काली, लाल व रोयेदार होती हैं तथा पत्तियों को खाकर फसल को नुकसान पहुंचाती हैं। इनके नियंत्रण हेतु ट्राइजोफास दवा की 800 मिली लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

## इफको संभागीय क्षेत्रीय सहकारी संगोष्ठी में नैनो उर्वरकों के उपयोग पर जोर

जबलपुर। जबलपुर संभाग की क्षेत्रीय सहकारी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में इफको, कृषि विभाग एवं सहकारी क्षेत्र के वरिष्ठ अधिकारियों ने सहभागिता की। संगोष्ठी में रजनीश पांडे, महाप्रबंधक (विपणन) इफको, डॉ. ओम शरण तिवारी, मुख्य क्षेत्र प्रबंधक इफको, हीरेंद्र रघुवंशी, मंडल प्रबंधक, मार्कफेड जबलपुर, श्री कटारें उप संचालक किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग, जबलपुर तथा अमित तिवारी, जिला विपणन अधिकारी, नरसिंहपुर विशेष रूप से उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में डॉ. ओम शरण तिवारी ने इफको की



गतिविधियों एवं मध्यप्रदेश में गत वर्ष की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए आगामी कार्ययोजना की जानकारी दी। रजनीश पांडे ने वर्तमान उर्वरक परिदृश्य पर चर्चा करते हुए किसानों को इफको के नैनो उर्वरक, जैव उर्वरक, जैव उत्प्रेरक, विशिष्ट उर्वरक एवं जल विलेय उर्वरकों के वैज्ञानिक एवं संतुलित उपयोग हेतु प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि इन उत्पादों के उपयोग से

किसान कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन संतोष रघुवंशी, उप क्षेत्र प्रबंधक, इफको कटनी द्वारा किया गया। प्रतीक गुप्ता, क्षेत्रीय अधिकारी, इफको सागर ने उपस्थित सभी अतिथियों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया। संगोष्ठी में जबलपुर संभाग के समस्त इफको क्षेत्र अधिकारी भी उपस्थित रहे।

किसान भाईयों...

# सुपर नहीं 'खेतान' मांगिए

तिलहनी, दलहनी सहित सभी फसलों में 'खेतान' डालो - मोटा 'मुनाफा' कमा लो

49 सुपर

सिंगल सुपर

बीरोन सुपर

भातत एन पी के 20:10:10:10

उपज बढ़ाने का सुपर फॉर्मूला

## खेतान 49+

### सिंगल सुपर फॉस्फेट

के साथ जिंक-बीरोन-मैग्नीशियम (दानेदार)

खेतान डालिए - मुनाफा निकालिए

खेतान केमिकल्स  
एण्ड फर्टिलाइजर्स लि.  
फॉन: 0731-4200748, 4253668

मुख्य: - निमराती (म.प्र.) - झांसी एवं ग्राम नरसो, मिता गन्तोपुर (उ.प्र.)  
- धीमबा (राज.) - राजनाथपुर (म.प्र.) - बरेल (थरुवा, गुज.)

किसान हिता में हमारा हित निहित है

- डॉ. स्वप्निल दुबे, वरिष्ठ वैज्ञानिक व प्रमुख
- डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी, वैज्ञानिक (पौध संरक्षण)
- श्री सुनील केथवास, प्रक्षेत्र प्रबंधक  
कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन (म.प्र.)

**फ**सलों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए कृषक अपनी कम से कम उपलब्ध भूमि में अधिक से अधिक उत्पादन लेना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि फसल व किस्मों का चुनाव भूमि के अनुरूप, जलवायु, मौसम एवं अन्य उपलब्ध संसाधनों के आधार पर करना चाहिए। फसलों की किस्मों का चुनाव करते समय भूमि का प्रकार, क्षेत्र विशेष की जलवायु, बुवाई का समय, पानी की उपलब्धता, क्षेत्र विशेष में कीट-व्याधि, रोग का प्रकोप व आगामी मौसम में बोये जाने वाली प्रस्तावित फसलों के आधार पर करना चाहिए। मध्यप्रदेश के सभी जिलों में कृषकों के द्वारा सोयाबीन, धान, उड़द, अरहर फसलों का उत्पादन लिया जाता है।

भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इन्दौर, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर एवं राजमाता विजयराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर द्वारा विकसित एवं अनुशासित सोयाबीन की किस्मों की विस्तृत जानकारी दी जा रही है। उन्नतशील प्रजातियों का चयन करके कृषक 15-20 प्रतिशत तक उत्पादन में वृद्धि कर सकते हैं।

**सोयाबीन की अनुशासित व नवीनतम किस्में**

किस्म	अनुशासित वर्ष	पकने की अवधि (दिन)	अधिकतम उपज (क्वि./हे.)	फूल
जे.एस.- 22-12	2024	90	21	सफेद
जे.एस.- 22-16	2024	91	21	सफेद
एन.आर.सी.-157	2023	92	16	बैंगनी
एन.आर.सी.-152	2023	89	18	बैंगनी
एन.आर.सी.-150	2023	91	18	सफेद
एन.आर.सी.-131	2023	92	15	बैंगनी
जे.एस.-21-72	2023	97	21	सफेद
आर.वी.एस.एम.-2011-35	2021	98	22	सफेद
एन.आर.सी.-130	2021	92	15	बैंगनी
एन.आर.सी.-138	2021	93	18	सफेद
एन.आर.सी.-142	2021	97	20	बैंगनी
आर.वी.एस.-76	2021	101	21	बैंगनी
जे.एस.-20-116	2019	95-100	22	सफेद
जे.एस.-20-94	2019	97	21	बैंगनी
एन.आर.सी.-127	2018	102	18	सफेद
जे.एस.-2098	2018	96-101	21	सफेद
आर.वी.एस.-18	2017	92	20	सफेद
आर.वी.एस.-2002-4	2017	92-96	19	सफेद
जे.एस.-2069	2016	93-95	19	सफेद
जे.एस.-2034	2015	86-88	21	सफेद
जे.एस.-2029	2014	93-96	21	सफेद
आर.वी.एस.-2001-4	2014	101-105	25	सफेद

**सोयाबीन की उन्नत किस्म**

**आरवीएसएम-11-35**

- ▶ पकने की अवधि: 94-98 दिन
- ▶ औसत उत्पादन: 21-22 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ अर्द्धसीमित वृद्धि एवं सफेद फूल, फल्लियों पर रोए
- ▶ फल्ली चटकने की समस्या नहीं
- ▶ पीला मोजेक एवं चारकोल रॉट के प्रति प्रतिरोधकता
- ▶ हार्वेस्टर से कटाई के लिये उपयुक्त

**जे.एस.- 21-71**

- ▶ पकने की अवधि: 97दिन
- ▶ अर्द्धसीमित वृद्धि एवं सफेद फूल
- ▶ औसत उत्पादन: 20-21 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ पीला मोजेक, चारकोल रॉट एवं राइजोक्टोनिया एरियल ब्लाइट के प्रति प्रतिरोधी



# भरपूर उत्पादन देने में सक्षम खरीफ की उन्नतशील प्रजातियां

**एनआरसी-130**

- ▶ पकने की अवधि: 92 दिन
- ▶ औसत उत्पादन: 15 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ सीमित वृद्धि एवं बैंगनी फूल एवं फल्लियों पर रोए
- ▶ बीज की नाभि के ऊपर भूरे रंग का टीका
- ▶ चारकोल रॉट एवं एन्थ्रेक्नोज के प्रति प्रतिरोधकता

**एनआरसी-131**

- ▶ पकने की अवधि: 92 दिन
- ▶ औसत उत्पादन: 15 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ अर्द्धसीमित वृद्धि व चिकनी फल्लियां
- ▶ चारकोल रॉट एवं एन्थ्रेक्नोज के प्रति प्रतिरोधकता

**एनआरसी-138**

- ▶ उच्च अंकुरण क्षमता
- ▶ पकने की अवधि: 90-93 दिन
- ▶ सीमित वृद्धि एवं सफेद फूल
- ▶ औसत उत्पादन: 18-20 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ पीला मोजेक के प्रति प्रतिरोधकता
- ▶ हार्वेस्टर से कटाई के लिये उपयुक्त

**एनआरसी-142**

- ▶ पकने की अवधि: 97 दिन
- ▶ सीमित वृद्धि एवं बैंगनी फूल
- ▶ कुनिज ट्रिप्सिन इन्हिबिटर व लायपोक्सीजिनेज एसिड-

**2 मुक्त प्रथम किस्म**

- ▶ औसत उत्पादन: 20 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ पीला मोजेक के लिए प्रतिरोधी

**एनआरसी-150**

- ▶ पकने की अवधि: 91 दिन
- ▶ अर्द्धसीमित वृद्धि एवं सफेद फूल
- ▶ औसत उत्पादन: 18 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ लिपोक्सीजिनेज-2 मुक्त किस्म
- ▶ पीला मोजेक के लिए मध्यम प्रतिरोधी
- ▶ चारकोल रॉट प्रतिरोधी किस्म

**एनआरसी-154**

- ▶ पकने की अवधि: 89 दिन
- ▶ अर्द्धसीमित वृद्धि एवं बैंगनी फूल
- ▶ औसत उत्पादन: 18 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ लिपोक्सीजिनेज-2 व ट्रिप्सिन इन्हिबिटर मुक्त किस्म
- ▶ तना मक्खी व चक्रभृंग के लिए प्रतिरोधी

**एनआरसी-157**

- ▶ पकने की अवधि: 92 दिन
- ▶ अर्द्धसीमित वृद्धि एवं बैंगनी फूल
- ▶ औसत उत्पादन: 16 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ देरी से बुवाई के लिए उपयुक्त

( शेष पृष्ठ 12 पर )





**सहकार से समृद्धि**

**कृभको उत्पाद की पहचान, भरपूर फसल खुशहाल किसान**




**कृषक भारती को-ऑपरेटिव लिमिटेड, म.प्र.**

# सोयाबीन की खेती-फायदा भरपूर देती



● डॉ. एम.के. श्रीवास्तव ● डॉ. पवन कुमार अमृते  
पादप प्रजनन एवं अनुवांशिकी विभाग  
जवाहरलाल नेहरू कृषि विवि., जबलपुर (म.प्र.)

**सोयाबीन बहुत ही महत्वपूर्ण तिलहनी फसलों में से एक है। म.प्र. में इसका क्षेत्रफल 53 लाख हेक्टेयर, उत्पादन लगभग 68 लाख टन और उत्पादकता 1285 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। सोयाबीन उत्पादन को सीमित करने वाली कुछ प्रमुख समस्याएँ हैं जिसके कारण उत्पादन एवं उत्पादकता में निरंतर गिरावट दर्ज की जा रही है एवं किसान माइनों को आर्थिक क्षति उठाना पड़ रही है।**

## सोयाबीन उत्पाद घटने का प्रमुख कारण

- ▶ चारकोल जड़ सड़न, पीला मोजैक एवं झुलसन।
- ▶ नए कीटों का प्रकोप जिसमें तने की मक्खी व चक्र भूंग (तना छेदक कीट), अर्ध कुन्डलक इल्ली, कम्बल कीट, तम्बाखू की इल्ली, अलसी की इल्ली, चने की फली छेदक (पत्ती भक्षक कीट) एवं सफेद मक्खी।
- ▶ भूमि में आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्वों का असंतुलन।
- ▶ भूमि में कार्बनिक पदार्थ की कमी।
- ▶ समुचित जल प्रबंध का अभाव एवं अवर्षा की स्थिति में सिंचाई साधनों की कमी।
- ▶ खरपतवार की समस्या।
- ▶ मौसम की प्रतिकूलता जिसमें क्रान्तिक अवस्थाओं में लम्बा सूखा, पकने की अवस्था में वर्षा का होना आदि।

## भूमि का चयन एवं तैयारी

- ▶ ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई के बाद 15-30 दिवस खेत खाली छोड़ने पर जमीन के नीचे आश्रय पाने वाले कीटों एवं भूमि जनित बीमारियों के अवशेष नष्ट हो जाते हैं तथा भूमि की जलधारण क्षमता एवं दशा में सुधार होता है।
- ▶ गोबर की खाद, कम्पोस्ट या वर्मी कम्पोस्ट तथा सिंगल सुपर फास्फेट को खेत में समान रूप से छिड़कने के बाद बोनी के लिए जुताई करना श्रेष्ठ है।
- ▶ खेत की मिट्टी भुरभुरी हो जाये एवं खरपतवार नष्ट हो जाये इस प्रकार जुताई करना चाहिए।
- ▶ बुआई के पूर्व खेत के निचले हिस्से में प्रति 20 मीटर अंतराल पर जल निकास नाली का निर्माण अवश्य करें अधिक वर्षा की दशा में पानी का निकास आसानी से हो सके एवं अवर्षा की दशा में सिंचाई उपलब्ध करा सके।

## बुवाई का समय

- ▶ सोयाबीन की बुवाई 20 जून (4-5 इंच वर्षा होने पर) से जुलाई के प्रथम सप्ताह के बीच उत्तम परिणाम देती है। इसमें परिस्थितिवश कुछ दिन आगे पीछे होना कोई विशेष प्रभाव नहीं डालता।

## जातियों का चयन

- ▶ सोयाबीन की जातियों का चुनाव उस क्षेत्र में वर्षा का औसत एवं भूमि के प्रकार को ध्यान में रखकर अर्थात् क्षेत्रीय अनुकूलता के आधार पर ही करना चाहिए।
- ▶ मध्यप्रदेश के विभिन्न जलवायु क्षेत्रों के लिए सोयाबीन की अनुकूल जातियां

## बीज दर

सोयाबीन की बीज दर 60-80 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर निर्धारित है। जब बीज छोटे हों या ज्यादा फैलने वाली प्रजाति हो तो 60-70 कि.ग्रा. एवं बड़ा बीज हो तथा कम फैलने वाली प्रजाति हो तो 80-85 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर बीज का प्रयोग करना चाहिए।

## बीजोपचार :

- ▶ बीजोपचार के लिए हमें एफआई.आर. को अपनाना चाहिये।
- ▶ कार्बाक्सिन 37.5 प्रतिशत+थायरम 37.5 प्रतिशत, 2 ग्राम/कि.ग्रा. बीज या थायोफिनेट मेथाइल+पाइराक्लास्ट्रोबिन (50 प्रतिशत एफ.एस.) 1.5 मि.ली / कि.ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करें।
- ▶ या पेनफ्लुफेन 13.28 प्रतिशत+ट्राइफ्लाक्सीस्ट्रोबिन 13.28 प्रतिशत की 1 मि.ली. प्रति किग्रा बीज।
- ▶ या ट्राइकोडर्मा हर्जियानम नामक जैविक फफूँ दनाशक की 5 ग्राम मात्रा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर सकते हैं, इससे बीज एवं मृदा जनित रोगों पर नियंत्रण पाया जा सकता है।
- ▶ जहां पर तना मक्खी, सफेद मक्खी एवं पीला मोजैक की समस्या ज्यादा हो वहां पर थायामेथोक्जाम 70 डब्ल्यू.एस. नामक कीटनाशक दवा से 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीज उपचारित कर सकते हैं।
- ▶ फफूँदनाशक एवं कीटनाशक दवा के उपचार के पश्चात् (शेष पृष्ठ 12 पर)

कृषि जलवायु क्षेत्र	जिले	उपयुक्त प्रजातियां
छत्तीसगढ़ का मैदान	बालाघाट तथा वारासिवनी	जे.एस. 335, जे.एस.93-05, जे.एस. 95-60,,जे.एस.20-34, जे. एस.20-29,जे.एस.20-98, जे.एस.20-116
कैमोर का पठार तथा सतपुड़ा की पहाड़ियां	जबलपुर, कटनी, पन्ना, सतना, रीवा, सीधी, शहडोल, उमरिया, डिंडोरी, मंडला, सिवनी	जे.एस.335, जे.एस. 95-60, जे.एस. 20-34, जे.एस. 20-69, जे.एस.20-98, जे.एस.20-116, जे.एस. 20-94, जे.एस.21-72, आर.वी.एस.एम. 2011-35
विन्ध्या पठार	भोपाल, सीहोर, विदिशा, सागर, दमोह, रायसेन	जे.एस. 335, जे. एस. 93-05, जे. एस. 95-60, जे. एस. 20-34, जे. एस. 20-29, जे.एस.20-69, जे.एस.20-98, जे.एस.20-116, जे.एस.20-94, जे.एस.21-72, आर.वी.एस.एम. 2011-35, एन.आर.सी. 130, आर.एस.सी.10-46, ए.एम.एम.बी.100-39
मध्य नर्मदा घाटी	नरसिंहपुर, होशंगाबाद, हरदा	जे.एस. 335, जे. एस. 95-05, एन.आर.सी. 37, जे. एस. 20-29, जे.एस.20-69, जे.एस.20-98, जे.एस.20-116, जे.एस.20-94, जे.एस.21-72, एन.आर.सी. 130, आर.एस.सी.10-46, आर.वी.एस.एम. 2011-35, ए.एम.एम.बी.100-39
गिर्द क्षेत्र शिवपुरी, गुना	ग्वालियर, मिन्ड, मुर्ना, गुना	जे.एस.335, जे. एस. 93-05,जे. एस. 95-60, जे. एस. 20-34, जे. एस. .20-69,, जे. एस. 20-98, एन.आर.सी.-86, आर.वी.एस. 2001-4, आर.वी.एस. 24, जे.एस.21-72, आर.वी.एस. 2002-4, आर.वी.एस.एम. 2011-35
बुंदेलखंड क्षेत्र	छतरपुर, टीकमगढ़, दतिया	जे.एस. 335, जे.एस. 93-05, एन.आर.सी. 37, जे. एस. 95 -60, 20-34, 20-29, जे.एस. 20-98, जे.एस.21-72, आर.वी.एस.एम. 2011-35
सतपुड़ा का पठार	छिंदवाड़ा, बैतूल	जे.एस. 335, जे.एस. 93-05,जे. एस. 95-60, एन.आर.सी.37, एन.आर.सी. 86, जे.एस 20-34, जे.एस.20-69,जे.एस.20-98, जे.एस.20-116, जे.एस.20-94, जे.एस. 21-72, एन.आर.सी. 127, एन.आर.सी. 130, आर.एस.सी.10-46, आर.वी.एस.एम. 2011-35
मालवा का पठार	मंदसौर, रतलाम, राजगढ़, शाजापुर, उज्जैन, इंदौर, देवास तथा धार का कुछ क्षेत्र	जे.एस. 335, जे. एस. 93-05, जे. एस.95-60, जे. एस 20-34, जे. एस.20-29, एन.आर.सी.37, एन.आर.सी. 7, एन.आर.सी. 86, आर.वी.एस. 2001-4, आर.वी.एस. 24, आर.वी.एस. 18, जे.एस.20-116, जे.एस.20-94, जे.एस.21-72, एन.आर.सी. 127, एन.आर.सी. 130, आर.एस.सी.10-46, आर.वी.एस.एम. 2011-35, ए.एम.एम.बी.100-39
निमाड़ घाटी	खंडवा, खरगोन, बडवानी,	जे.एस. 335, जे. एस. 93-05, जे. एस. 95-60, जे.एस.20-34, जे. एस. 20-29, एन.आर.सी. 37, एन.आर.सी. 86, आर.वी.एस. 2001-4, आर.वी.एस. 24, आर.वी.एस. 18,, जे.एस.20-116, जे.एस.20-94, जे.एस.21-72, एन.आर.सी. 127, एन.आर.सी. 130,आर.एस.सी.10-46, आर.वी.एस.एम. 2011-35, ए.एम.एम.बी.100-39
झाबुआ की पहाड़ियाँ	झाबुआ तथा धार का कुछ क्षेत्र	जे.एस. 335, जे. एस. 93-05, एन.आर.सी. 7, एन.आर.सी. 86, जे. एस. 95-60, आर.वी.एस. 18, जे.एस.20-34, जे.एस.21-72, आर.वी.एस.एम. 2011-35



**अब डीएपी की बोरी करो कम और बाद में दो**

**गोमोर नैनो डीएपी का दम।**

**मूँग की फसल में प्रति एकड़ 1 लीटर गोमोर नैनो DAP का प्रयोग करें!**

**ज्यादा फूल - ज्यादा फली**

**फली भराव बेहतर - मुनाफा भी बेहतर**

प्रति एकड़ 1 लीटर (500 मिली के 2 छिड़काव)

**छिड़काव के चरण :**

- पहला छिड़काव - वनस्पतिक अवस्था में (बुवाई/रोपाई के 25-30 दिन बाद)
- दूसरा छिड़काव - फूल खिलने से पहले की अवस्था में (बुवाई/रोपाई के 40-45 दिन बाद)

### ( पृष्ठ 11 का शेष ) उन्नत तरीके से करें...

- 5-10 ग्राम ब्रेडीराइजोबियम कल्चर एवं 5-10 ग्राम पी.एस.बी. कल्चर से प्रति किलो बीज उपचारित करके बुवाई करें।
- भूमि की भौतिक दशा एवं गुणों को बनाये रखने तथा उत्पादन वृद्धि हेतु के लिए 5-10 टन गोबर की खाद या कम्पोस्ट या 5 टन फसलों का बारीक किया हुआ कचरा या भूसा और 5 टन कम्पोस्ट प्रति हेक्टेयर का उपयोग अच्छा परिणाम देता है।
- जहाँ पर मृदा परीक्षण के उपरान्त जिंक एवं बोरान तत्व की कमी पाई जाये, वहाँ 7.5 कि. ग्रा. प्रति दो वर्ष के अंतराल पर जिंक एवं 1.0-1.5 कि.ग्रा. बोरान प्रति हेक्टेयर के हिसाब से देना लाभकारी है।

- रासायनिक उर्वरकों में फास्फोरस की पूरी मात्रा सिंगल सुपर फास्फेट के रूप में देने पर गंधक पूर्ति हो जाती है या जिप्सम 2-2.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपयोग करने से भी गंधक की कमी पूरी हो जाती है।
- सामान्यतः सोयाबीन में 20-30 कि.ग्रा. नत्रजन, 60-80 कि.ग्रा. फास्फोरस एवं 20-30 कि.ग्रा. पोटाश तथा 20 कि.ग्रा. गंधक की मात्रा आवश्यक रूप से उपयोग करने की सलाह दी जाती है।

#### बुवाई का तरीका

- सोयाबीन की बुवाई करते समय कतार से कतार की दूरी 45 से.मी. होना चाहिए।
- कम ऊँचाई वाली जातियों या कम फैलने वाली जातियों को 30 से.मी. की कतार से कतार की दूरी पर बोना चाहिए।

- पौधे से दूरी 5-7 से. मी. रखना चाहिए।
- बुवाई का कार्य मेढ-नाली विधि एवं चौड़ी पट्टी-नाली विधि से करने से सोयाबीन की पैदावार में वृद्धि पायी गयी है एवं नमी संरक्षण तथा जल निकास में भी यह विधियाँ अत्यंत प्रभावी पायी गयी हैं।
- विपरीत परिस्थितियों में बुवाई दुफन, तिफन या सीड ड्रिल से कर सकते हैं।
- बुवाई के समय जमीन में उचित नमी आवश्यक है।
- बीज जमीन में 2.5 से 3 से.मी. गहराई पर पड़े।

#### अंकुरण के बाद फसल की सुरक्षा

बुवाई के तीसरे दिन से 1 सप्ताह तक अंकुरित नवजात पौधों को पक्षियों से बचना बहुत आवश्यक है।

#### जल प्रबंध

- सामान्य तरीके से बुवाई के बाद 20-20 मीटर की दूरी पर ढाल के अनुरूप जल निकास नालियाँ अवश्य बनायें, जिससे अधिक वर्षा की स्थिति में जलभराव की स्थिति पैदा न हो एवं आवश्यकतानुसार सिंचाई भी दी जा सके।
- यदि एक सप्ताह से ज्यादा वर्षा का अंतराल हो जाये तो सिंचाई की सुविधा होने पर हल्की सिंचाई इन्हीं नालियों के माध्यम से करें। उचित जल प्रबंध से सोयाबीन की पैदावार में वृद्धि होती है।

#### खरपतवार नियंत्रण

- 20-25 दिन एवं 40-45 दिन की फसल होने पर फसल से खरपतवार निकाल देना चाहिए। मजदूरों द्वारा हाथ से निंदाई करवाने के परिणाम अच्छे मिले हैं।
- परन्तु मजदूरों की कमी, वर्षा का अंतराल एवं जमीन की स्थिति से हाथ की निंदाई खरीफ

मौसम में कभी-कभी कठिन हो जाती है। अतः यांत्रिक विधियों में सी.आई.ई.ई. भोपाल द्वारा निर्मित उन्नत हैन्ड हो या बैलों से चलने वाला कुल्पा या डोरा से भी निंदा नियंत्रण कर सकते हैं। आवश्यकतानुसार रासायनिक निंदानाशकों का उपयोग भी करना चाहिए।

#### इन निंदानाशकों को चार समूहों में बांटा गया है-

- बोनी से पूर्व (पी पी आई)
- पेण्डिमिथलीन+इमेडोथापायर 2.5-3.00 लीटर प्रति हेक्टेयर। बोनी से पूर्व नम मिट्टी में छिड़ककर मिला कर दें।
- बोनी तुरन्त बाद बाद अंकुरण से पूर्व (पीई)
- डायक्लोसुलम 84 डब्ल्यू.डी.जी. 26 ग्रा. क्रियाशील अवयव प्रति हेक्टेयर।
- या पेन्डिमिथलीन 30 ई.सी. 3.25 लीटर प्रति हेक्टेयर।
- या पेन्डिमिथलीन 38.7 सी.एस. 1.5-1.75 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर।
- या सल्फेन्ट्राझोन 48 एस.सी. 0.75 ली. प्रति हेक्टेयर।
- या क्लोमेजोन 50 ई.सी. 1 कि.ग्रा. क्रियाशील अवयव प्रति हेक्टेयर।
- या पायरोक्सासल्फान 85 डब्ल्यू.जी. 150 ग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से बोनी के बाद एवं अंकुरण के पूर्व छिड़काव करने से खरपतवार नियंत्रण सफलतापूर्वक किया जा सकता है।
- बोनी के 10-12 दिन बाद (पीओई)
- सोयाबीन की बोनी के 10-12 दिन के बीच खड़ी फसल में।
- क्लोरीम्यूरान इथाइल 25 डब्ल्यू.पी. 36 ग्राम प्रति हेक्टेयर।
- या बेन्डाझोन 48 एस.एल. 2 लीटर/हेक्टे.।

### ( पृष्ठ 10 का शेष ) खरीफ फसलों की उन्नतशील प्रजातियों...

#### सुगंधित धान की उन्नत किस्में

उपयुक्त किस्में	अनुशासित वर्ष	पकने का समय ( दिन )	उपज क्षमता ( किं./हे. )
पूसा-1847	2022	105-110	50-55
पूसा-1885	2022	125-130	55-60
पूसा-1886	2022	140-145	55-60
पूसा-1692	2020	105-110	50-55
पूसा- 1718	2017	135-140	45-50
पूसा- 1637	2016	125-130	50-55
पूसा- 1728	2016	140-145	50-55
पूसा- 1509	2013	105-110	45-50
पूसा सुगंधा-6 (पूसा- 1401)	2008	145-150	50-55
पी.बी.-1460 उन्नत बासमती-1)	2007	135-140	55-60
पूसा सुगंधा-5 (पूसा -2511)	2005	120-125	55-60
पूसा सुगंधा-4 (पी.बी.-1121)	2003	140-145	40-45
पूसा सुगंधा-2	2001	120-125	50-55
पूसा सुगंधा-3	2001	120-125	55-60
पी.बी.-1 (पूसा बासमती-1)	1989	130-135	40-50

**पूसा-1637** : पूसा बासमती -1 का सुधरा हुआ रूप। पकने की अवधि- 125-130 दिन उपज- 50-55 क्विंटल/हेक्टेयर ब्लास्ट एवं बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट रोग की प्रति प्रतिरोधी।  
**पूसा-1847** : पूसा बासमती -1509 का सुधरा हुआ रूप। पकने की अवधि- 105-110 दिन अर्द्धबोनी एवं जल्दी पकने वाली प्रजाति। उपज- 50-55 क्विंटल/हेक्टेयर ब्लास्ट एवं बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट रोग की प्रति प्रतिरोधी।  
**पूसा-1885** : पूसा बासमती -1121 का सुधरा हुआ रूप। पकने की अवधि- 125-130 दिन उपज- 55-60 क्विंटल/हेक्टेयर ब्लास्ट एवं बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट रोग की प्रति प्रतिरोधी।  
**पूसा-1886** : पूसा बासमती - 6 का सुधरा हुआ रूप। पकने की अवधि- 140-145 दिन उपज- 55-60 क्विंटल/हेक्टेयर ब्लास्ट एवं बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट रोग की प्रति प्रतिरोधी।

#### उड़द की उन्नत किस्में

उपयुक्त किस्में	अनुशासित वर्ष	पकने का समय ( दिन )	उपज क्षमता ( किं./हे. )
पी.यू.-31	2008	75-80	12-13
पी.यू.-40	2008	70-75	14-15
प्रताप उड़द-1	2012	70-75	13-15
आई.पी.यू.-11-02	2019	70-80	8-10
आई.पी.यू.-13-01	2020	70-80	9-10
आई.पी.यू.-10-26	2020	70-80	8-10

#### अरहर की उन्नत किस्में

उपयुक्त किस्में	अनुशासित वर्ष	पकने का समय ( दिन )	उपज क्षमता ( किं./हे. )
आई.पी.ए.-15-06	2021	140-145	21-25
जी.आर.जी.-152	2020	160-165	14-15
राजेश्वरी	2012	135-150	18-20
पूसा-16	2018	120	18-20

#### तिल की उन्नत किस्में

किस्में	फसल अवधि ( दिन )	उत्पादन ( किं./हे. )	विशेषताएं
टी.के.जे.- 308	80-85	6-7	● जड़ सड़न अवरोधी।
जे.टी.-11	80-85	6-7	● ग्रीष्मकाल हेतु उपयुक्त।
टी.जे.एम.-8	80-85	6-7	● पर्ण अंगमारी रोग अवरोधी।
टी.के.जे.-55	75-80	6-7	● जड़ सड़न अवरोधी।

## खेती का उत्पादन बढ़ाकर कृषकों को समृद्ध करने के लिए

### इफको नैनो उर्वरकों की वृहद श्रृंखला

**इफको का है वादा, लागत कम उत्पादन ज्यादा**

1 लि.ली. नैनो जिंक प्रति लीटर पानी के अनुपात में घोल बनाकर 30-35 दिन की फसल अवस्था में पौधों पर छिड़काव करें।

1 लि.ली. नैनो कॉपर प्रति लीटर पानी के अनुपात में घोल बनाकर 30-35 दिन की फसल अवस्था में पौधों पर छिड़काव करें।

नेनो यूरिया नैनो डीएपी की श्रेणी पर प्रति लीटर **₹. 10000/-** का आकर्षित **दुर्घटना बीमा मुफ्त**

4 लि.ली. नैनो यूरिया प्रति लीटर पानी में घोलकर प्रति छिड़काव 500 लि.ली. मात्रा का दो बार, 35-40 दिन एवं 55-60 दिन पर छिड़काव करें।

नेनो डीएपी का प्रयोग बीज उपचार में 5 लि.ली. प्रति किलो बीज एवं जड़ उपचार में 3 लि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर करें। इसके पश्चात खड़ी फसल में 35-40 दिन में 4 लि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर पौधों पर छिड़काव करें।

**इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड, मध्यप्रदेश**

- डॉ. सर्वेश कुमार • डॉ. एस.के. तिवारी
- डॉ. मुकेश बंकोलिया
- डॉ. ओ.पी. भारती (वैज्ञानिक)

**डु** निया में मुख्य खाद्यान्न फसलों में गेहूँ एवं धान के बाद तीसरी मुख्य फसल के रूप में मक्का सामने आ रही है। इसका मुख्य कारण है इसकी उत्पादकता। क्योंकि इसकी उत्पादन क्षमता गेहूँ एवं धान से 25-100 प्रतिशत तक अधिक है। वर्षा ऋतु में उत्तम जल निकास वाली भूमियों में इसकी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है।

मक्का के लिए 6.5 से 7.5 पीएच मान वाली मिट्टी उत्तम होती है। औसत वर्षा, नमी युक्त उच्च तापमान वाला मौसम मक्का की वृद्धि एवं विकास व अच्छे उत्पादन के लिए सहायक होता है। खरीफ मक्का का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित कार्ययोजना को अपनाकर खेती कर सकते हैं जिसके प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं।

**भूमि का चयन एवं भूमि की तैयारी:** बलुई दोमट मिट्टी एवं उत्तम जल निकास वाली भूमि मक्का उत्पादन के लिए उपयुक्त है। गर्मी की गहरी जुताई करने के पश्चात् सूर्याताप से भूमि को उपचारित होने दिया जाता है तथा मानसून आने पर शीघ्र ही 2-3 जुताई कल्टीवेटर, हैरो या बख्खर चलकर मिट्टी को भुरभुरा बना लिया जाता है।

**उपयुक्त किस्में:** मक्का के लिए संकर जातियां विपुल उत्पादन देती हैं अतः किसान भाई खरीफ ऋतु में लगाई जाने वाली मक्का की संकर किस्मों का चयन कर सकते हैं। मक्का का संकर बीज निजी कंपनियों से खरीद सकते हैं। मध्य प्रदेश के लिये प्रमुख अधिसूचित संकर किस्में निम्नानुसार हैं।

किस्में	प्रकार	अवधि	उत्पादन
पी.ई.एच.एम.-1 एवं पी.ई.एच.एम.-2 (मा.कृ.अनु. परिषद नई दिल्ली) प्रो.-368 (प्रो.एग्रो) एक्स.-3342 (पायोनियर) डी.के.सी.-7074 (मोन्सेन्टो) जे.के.एम.एच.-175 (जे.के. सीड्स) बायो-9637 (बायो सीड्स) के.एच.-5991 (कंचनगंगा)	संकर	शीघ्र पकने वाली (85 दिन से कम)	40 से 50 विव. प्रति हेक्टेयर
के.एम.एच.-3426, के.एम.एच.-3712 (कावेरी सीड्स) एम.एन.एच. 803 (नुजीवीडु सीड्स) बिस्को-2418, बिस्को-111 (बिस्को सीड्स)	संकर	मध्यम अवधि (95 दिन से 85 दिन)	50 से 70 विव. प्रति हेक्टेयर
बिस्को.-855 (बिस्को सीड्स) एन.के.-6240 (सिंजैन्टा) एस.एम.एच.-3904 (शक्ति सीड्स) प्रो.-311 (प्रो. एग्रो) बायो.-9681 (बायो सीड्स) सीडैक-740, सीडैक-2324 (सीडैक)	संकर	देरी से पकने वाली (95 दिन से अधिक)	60 से 80 विव. प्रति हेक्टेयर

**बोनी का उपयुक्त समय:** बुआई हेतु 15-30 जून खरीफ मौसम में एवं रबी मौसम में अक्टूबर माह में उपयुक्त होगा। जायद के लिये फसल बुआई का समय निश्चित करते समय यह ध्यान रखे की फूल की अवस्था के समय तापमान 35 से.ग्रे. से अधिक न हो स बोने की गहराई 3 से 5 सेमी रखें।  
**कतार से कतार एवं पौधे से पौधे की दूरी**

विवरण	कतार से कतार की दूरी सेमी	पौधे से पौधे की दूरी सेमी	प्रति हेक्टेयर पौधों की संख्या
जल्दी पकने वाली	60	20	80000
मध्यम अवधि	60	22	75000
देर से पकने वाली	75	20	65000

**बीजोपचार का लाभ:** बीजों की अंकुरण क्षमता बढ़ जाती है एवं बीज जनित फफूंदजन्य बीमारियों से सुरक्षा होती है। फफूंदजनित बीमारियों से बचाव हेतु फफूंदनाशक दवा कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम एवं थायरम 2 ग्राम प्रति किग्रा बीज अथवा वीटावेक्स पावर



# खरीफ में मक्का लगाएं लाभ कमाएं

**रोग प्रबंधन: मक्का फसल के प्रमुख रोग का विवरण.**

रोग का नाम	लक्षण	नियंत्रण हेतु अनुशसित दवा	उपयोग करने का समय
पर्ण अंगमारी	छोटे गोला,अण्डाकार भूरे कल्थाई रंग के धब्बे बनते हैं।	जिनेम, मिनेब 2.5-4 ग्राम प्रति ली.	8-10 दिन के अंतराल पर
भूरी घिती	पतियां तने तथा भुट्टे के बाहरी छिलके पर हल्के पीले रंग के 1.5 मिलीमीटर व्यास के गोलाकार, अंडकार धब्बे बनते जाते हैं।	डाइथेन एम 45 या मैकोजेब 2-2.5 ग्राम प्रति लीटर	बीमारी के शुरुआत होने पर
मृदूरोमिल आसिता (डउजी मिलड्यू)	प्रारंभ में निचली पतियों पर लम्बवत 3 मिली मीटर चौड़ी पीले रंग की धारियां समानान्तर रूप में बनती हैं। बाद में ये धारियां भूरे रंग में बदल जाती हैं।	एप्रोन 35 डब्ल्यू.एस. (फफूंदनाशक) 2.5 ग्राम प्रति किग्रा बीज बीजोपचार	बोनी पूर्व बीजोपचार के समय

**कीट प्रबंधन: मक्का फसल के प्रमुख कीट का विवरण**

कीट का नाम	लक्षण	नियंत्रण हेतु अनुशसित दवा	दवा की व्यापारिक मात्रा/हे.	उपयोग करने का समय एवं विधि
तना छेदक मक्खी	इसके प्रकोप से पौधे का मुख्य प्ररोह कट जाने से मृत केन्द्र (डेडहार्ट) बन जाता है तथा पौधा मर जाता है।	फोरेट10जी	10 किग्रा./हे.	बोनी पूर्व
तना छेदक कीट	इल्लियां पहले पत्ती को खुरच-खुरचकर खाती हैं, जिससे मृत केन्द्र (डेडहार्ट) बन जाता है।	कार्बोपयूरान 3जी	10 किग्रा./हे.	15 दिन की अवस्था में पौधे की पोंगली में डालें।

1 ग्राम प्रति किग्रा की दर से उपचार करें। कीट प्रबंध के लिये एमीडाक्लोप्रिड 70 (डब्ल्यू एस) 5 ग्राम प्रति किग्रा बीज से उपचारित करें जिससे पौधे 30 दिन तक सुरक्षित होंगे। यदि जैव उर्वरकों से बीजोपचार करना है तो अंत में पी.एस.बी. एवं एजोटोबेक्टर कल्चर की 5-10 ग्राम मात्रा प्रति किलोग्राम बीज की

दर से बीजोपचार करके बोनी करें तो ज्यादा पैदावार की संभावना होती है। जैव उर्वरकों का उपयोग 2.5-3 किग्रा पी.एस.बी. एवं 2.5-3 किग्रा एजोटोबेक्टर प्रति एकड़ की दर से लगभग 100-150 किग्रा गोबर की खाद में मिलकर बुवाई के पहले छिड़काव करने से अच्छे परिणाम मिलते हैं।  
( शेष पृष्ठ 16 पर )

## ट्रॉपिकल एग्रोसिस्टम के उत्कृष्ट उत्पाद

### ट्रॉपिकल एग्रोसिस्टम (इं) प्रा. लि., चेन्नई

मद्र शाखा कार्यालय- 105 कॉर्पोरेट हाउस, 169 आर.एन.टी.मार्ग, इंदौर ( म.प्र. )  
फोन: 0731-4045702 E-mail:indore@tropicalagro.com



● डॉ. गीता सिंह, वैज्ञानिक कृषि विस्तार  
कृषि विज्ञान केन्द्र, डिण्डौरी (म.प्र.)  
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

**बी**ज का अंकुरण बुवाई से एक सप्ताह पहले किया जाना चाहिए। इससे यह तय करने में मदद मिलेगी कि बीज परिवर्तन की आवश्यकता है या सही समय पर इसकी मात्रा बढ़ाई जाए। यदि बीज 80 से 90 प्रतिशत तक अंकुरित होते हैं, तो वे अच्छे हैं। यदि बीज का अंकुरण 60 से 70 प्रतिशत तक है, तो बुवाई के समय बीज की मात्रा बढ़ाएं और अंकुरण 50 से कम हो, और फिर बीज बदल दें ताकि आपको फसल में नुकसान का सामना न करना पड़े।

भंडारित बीजों से 100 बीज गिनकर खपरैल, परात या ट्रे में भुरभुरी मिट्टी से भरकर या गीली बोरी या फट्टी में गिने दानों को कतार में बोएं। अंकुरण होने तक आवश्यकतानुसार पानी से गीला करते रहें। स्वस्थ अंकुरित पौधों को गिनकर अंकुरण प्रतिशत ज्ञात करें। उदाहरण के लिए गेहूं या चने के अंकुरण परीक्षण में 100 दानों में से 50 दाने ही स्वस्थ अंकुरित हुए अतः गेहूं या चने के बीज का अंकुरण प्रतिशत 50 हुआ जबकि बोने की सिफारिश 85 है अतः यह बीज बोने के उपयोग में नहीं लेना चाहिए।

#### पेपर से बीज अंकुरण परीक्षण प्रक्रिया

- ▶ यह एक प्रभावी और सरल विधि है। इसमें आप चार परत में एक पेपर लेते हैं, फिर इसे 3 या 4 बार मोड़ते हैं, फिर बिना छंटाई किए बीज को कागज पर पंक्तिबद्ध कर रख दें। फिर पेपर के दोनों कोनों को धागे के साथ बंद कर दें। फिर पेपर को पानी में भिगो दें।
- ▶ अतिरिक्त पानी को बाहर निकाल दें।
- ▶ अतिरिक्त पानी को निकालने के बाद पेपर को एक पॉलीथीन बैग में रखें और इसे अंदर घर में लटका कर रखें।



## अंकुरण परीक्षण का महत्व

- ▶ 4-5 दिनों के बाद अखबार खोलें, अंकुरों की संख्या की गणना करें और बीज के अंकुरण का प्रतिशत जानें।
  - ▶ इस विधि का उपयोग धान के लिए नहीं किया जा सकता है।
- फॉर्मूला**
- अंकुरण प्रतिशत= अंकुरित बीजों की संख्या X100/कुल बोए गए बीज
- मान लो आपने कुल 100 बीज बोए थे उसमें से 70 बीज अंकुरित हुए तब उसका अंकुरण प्रतिशत 70 होगा।
- अंकुरण प्रतिशत=70X100/100
- यदि आपने कुल 150 बीज बोए है जिसमें से 110 बीज ही

अंकुरित हुए तब अंकुरण प्रतिशत 73.33 प्रतिशत होगा। यदि 75 प्रतिशत से कम है तो बीज की मात्रा बढ़ानी होगी कितना अतिरिक्त बीज बोया जाए इस हेतु इस फार्मूले का उपयोग करें।

गेहूं प्रति हेक्टेयर हेतु अनुसंशित बीज की मात्रा 100 किलोग्राम है। यदि अंकुरण प्रतिशत 70 है तब बोए जाने वाले बीज की मात्रा 143 किलोग्राम होगी।

**बोए जाने वाले बीज की मात्रा= अनुसंशित बीज की मात्रा X100/अंकुरण प्रतिशत**

100X100/70=142.85 अर्थात 143 किलोग्राम बीज/हेक्टेयर बोया जाना चाहिए।

फसल का नाम	अंकुरण प्रतिशत
धान	80
अरहर	75
मक्का (संकर)	90
मूंग	75
उड़द	75
मूंगफली	70
कपास	65
बरबटी	75
रामतिल	80
सोयाबीन	70
तिल	80
मसूर	75
चना	85
अलसी	80
गेहूं	85
मटर	75
सरसों एवं राई	85
सूरजमुखी	70

**शाजापुर।** आगामी खरीफ सीजन को ध्यान में रखते हुए ग्राम उगली, जिला शाजापुर में कृषि विज्ञान केंद्र शाजापुर द्वारा खरीफ फसलों की उन्नत तैयारी एवं प्रबंधन पर एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम किसान संघ के जिलाध्यक्ष सवाई सिंह सिसोदिया के मुख्य आतिथ्य एवं कृषि विज्ञान केंद्र के पूर्व प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. जी.आर. अम्बावतिया के विशिष्ट आतिथ्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस.एस. धाकड़ ने की।

### खरीफ फसलों की खेती का कृषक प्रशिक्षण



उर्वरकों के अंधाधुंध प्रयोग से बचने तथा जल प्रबंधन एवं आधुनिक बुवाई तकनीकों को अपनाने पर बल दिया। उन्होंने बताया कि पारंपरिक विधि के स्थान पर 'रेज्ड बेड' अथवा 'ब्रॉड बेड फरो' पद्धति से बुवाई करने पर जलभराव की स्थिति में फसल सुरक्षित रहती है तथा सूखे की स्थिति में नमी संरक्षण भी बेहतर होता है।

कार्यक्रम में वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस.एस. धाकड़ ने आधुनिक कृषि तकनीकों, सोयाबीन में जल निकास प्रबंधन, भू-जल संवर्धन, संरक्षित खेती, उन्नत कृषि यंत्रों एवं अवशेष प्रबंधन की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि मानसून के आगमन से पूर्व खेतों की तैयारी पूर्ण कर लें तथा केवल प्रमाणित एवं उन्नत किस्मों के बीजों का उपयोग करें। उन्होंने बिना मिट्टी परीक्षण के

पूर्व प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. जी.आर. अम्बावतिया ने किसानों को उद्यानिकी एवं औषधीय फसलों की उन्नत तकनीकों को अपनाने की सलाह दी। डॉ. मुकेश सिंह ने खरीफ सीजन में कीट एवं रोग प्रबंधन की अग्रिम तैयारियों पर जानकारी दी। डॉ. डी.के. तिवारी ने खरीफ फसलों की उन्नत किस्मों, एकीकृत पोषक तत्व

### देश की अहम कृषि समिति की कमान संभालेंगे डॉ. शुक्ला

**ग्वालियर।** राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरविंद शुक्ला को देश के प्रतिष्ठित केंद्रीय बरानी एवं शुष्क खेती अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद की उच्चस्तरीय समिति का चेयरमैन नियुक्त किया गया है। यह समिति देश में वर्षा आधारित एवं शुष्क कृषि की दिशा तय करने का महत्वपूर्ण कार्य करेगी। देश के छह प्रमुख कृषि वैज्ञानिकों वाली इस समिति का उद्देश्य ऐसी रणनीति



तैयार करना है, जिससे कम पानी और विपरीत जलवायु परिस्थितियों में भी किसानों को बेहतर उत्पादन मिल सके। समिति की सिफारिशों के आधार पर कृषि मंत्रालय राष्ट्रीय स्तर पर नीतियां तैयार करेगा। डॉ. शुक्ला ने बताया कि समिति में डॉ. वेल मुरगन वाइस चेयरमैन तथा डॉ. जगदीश राणे सदस्य सचिव हैं। इसके अलावा डॉ. मेहता, डॉ. शैलेंद्र, डॉ. यादवेंद्र सिंह और डॉ. एम.ए. शंकर सदस्य के रूप में शामिल हैं।

## देवपुत्र

उत्कृष्ट प्रमाणित बीज  
सिटी कम्पोस्ट • प्रॉम खाद  
ऑर्गेनिक मेन्यूअर  
वर्मी कम्पोस्ट

## गंगा एवं जय जवान

NPK निक्स फर्टिलाइजर

12:32:06  
20:20:10  
08:32:08  
15:15:7%

## रत्नम

सिंगल सुपर फॉस्फेट  
(मायडर एवं दानेदार)

ज़िक सल्फेट 21%  
मोनो ज़िक 33%

**JYOTI**  
WEIGHING SYSTEMS PVT. LTD.

Our Products: • Pit Type Weighbridge  
• Weighbridge Automation Software  
• MS WIM (Weigh In Motion)  
• Pit Type Weighbridge  
• Mobile Weighbridge  
• Weight Indicator

305, उत्सव एवेन्यू, 12/5, उषागंज (जावरा कल्याणगढ़)  
इंदौर (म.प्र.) फोन: 0731-4064501, 4087471  
मो. 98272-47057, 98270-90267, 94251-01395

सभी सहकारी समितियों एवं विपणन संघ केंद्रों पर उपलब्ध

## खरीफ 2026 के लिये प्रमाणित बीजों की विक्रय दरें घोषित

भोपाल। अपर मुख्य सचिव सह कृषि उत्पादन आयुक्त की अध्यक्षता में प्रमाणित बीज उपार्जन/विक्रय दरों के संबंध में बीज दर निर्धारण समिति की बैठक में लिये गये निर्णय अनुसार राज्य

शासन द्वारा खरीफ वर्ष 2025 में उत्पादित फसलों हेतु उपार्जन दरें तथा खरीफ विपणन वर्ष 2026 हेतु फसलों के प्रमाणित बीजों की विक्रय दरें निर्धारित कर दी गई है, जो निम्नानुसार है।

फसल	खरीफ 2026 हेतु सकल उपार्जन दर	प्रमाणित बीजों हेतु सकल विक्रय दर
सोयाबीन (15 वर्ष तक की अवधि)	5500	7220
सोयाबीन (15 वर्ष से अधिक अवधि)	5500	7220
तिल (15 वर्ष तक की अवधि)	10440	13500
तिल (15 वर्ष से अधिक अवधि)	10440	13500
रामतिल (15 वर्ष तक की अवधि)	9700	12740
रामतिल (15 वर्ष से अधिक अवधि)	9700	12740
मूंगफली (15 वर्ष तक की अवधि)	7500	9300
मूंगफली (15 वर्ष से अधिक अवधि)	7500	9300
धान सुगन्धित (10 वर्ष तक की अवधि)	2680	4320
धान सुगन्धित (10 वर्ष से अधिक अवधि)	2680	4320
धान मोटी (10 वर्ष तक की अवधि)	2490	4120
धान मोटी (10 वर्ष से अधिक अवधि)	2490	4120
धान पतली (10 वर्ष तक की अवधि)	2600	4230
धान पतली (10 वर्ष से अधिक अवधि)	2600	4230
मक्का (10 वर्ष तक की अवधि)	2520	4350
मक्का (10 वर्ष से अधिक अवधि)	2520	4350
ज्वार (10 वर्ष तक की अवधि)	3900	6240

ज्वार (10 वर्ष से अधिक अवधि)	3900	6240
कोदो (10 वर्ष तक की अवधि)	2750	5010
कोदो (10 वर्ष से अधिक अवधि)	2750	5010
कूटकी (10 वर्ष तक की अवधि)	3600	5880
कूटकी (10 वर्ष से अधिक अवधि)	3600	5880
मूंग (10 वर्ष तक की अवधि)	9200	11650
मूंग (10 वर्ष से अधिक अवधि)	9200	11650
उड़द (10 वर्ष तक की अवधि)	7950	10360
उड़द (10 वर्ष से अधिक अवधि)	7950	10360
अरहर (10 वर्ष तक की अवधि)	8540	10970
अरहर (10 वर्ष से अधिक अवधि)	8540	10970

### जैविक बीजों हेतु दरें

धान (10 वर्ष तक की अवधि)	3100	4750
धान (10 वर्ष से अधिक अवधि)	3100	4750
कोदो (10 वर्ष तक की अवधि)	4600	6910
कोदो (10 वर्ष से अधिक अवधि)	4600	6910
अरहर (10 वर्ष तक की अवधि)	10500	12990
अरहर (10 वर्ष से अधिक अवधि)	10500	12990

## खरीफ-2026 की कार्ययोजना पर हुआ मंथन

टीकमगढ़। कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा 31वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन कृषि विज्ञान केंद्र परिसर में किया गया। बैठक का आयोजन प्रो. पी.के. मिश्रा, कुलगुरु, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। बैठक में विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. धीरेन्द्र खरे, डॉ. टी.आर. शर्मा, डॉ. वी.के. यादव तथा डॉ. डी.एस. तोमर उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान कृषि विज्ञान केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बी.एस. किरार ने रबी 2025-26 में किए गए कार्यों तथा खरीफ 2026 की प्रस्तावित कार्ययोजना का पॉवर पॉइंट प्रस्तुतीकरण किया। उन्होंने केंद्र में स्थापित विभिन्न प्रदर्शन इकाइयों एवं उनकी उपलब्धियों की भी जानकारी दी।

बैठक में सुझाव देते हुए प्रो. पी.के. मिश्रा ने पशुपालन विभाग के सहयोग से प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने, मखाना, सिंघाड़ा एवं कमलगट्टा जैसी पारंपरिक फसलों के संरक्षण एवं



पुनर्जीवन हेतु कार्य करने, मत्स्य पालन प्रदर्शन में सुधार लाने तथा धान में डीएसआर तकनीक के प्रदर्शन को बढ़ावा देने पर बल दिया। डॉ. टी.आर. शर्मा ने दो एकड़ क्षेत्रफल पर एकीकृत कृषि प्रणाली मॉडल विकसित करने, प्राकृतिक खेती के विभिन्न घटकों का मूल्यांकन करने तथा मत्स्य पालन के साथ सिंघाड़ा उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए उद्यानिकी एवं मत्स्य वैज्ञानिकों के संयुक्त प्रयासों पर जोर दिया। उन्होंने उर्द की किस्मों को एक साथ प्रक्षेत्र परीक्षण एवं अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन में शामिल नहीं करने तथा बोरॉन

संबंधी गतिविधियों को केवल प्रशिक्षण तक सीमित रखने का सुझाव दिया। बैठक में कृषि, उद्यानिकी, कृषि अभियांत्रिकी, किसान उत्पादक संगठन, बीज उत्पादक संस्थाओं, एग्री-स्टार्टअप, पतंजलि एवं दिव्ययोग संस्थान के प्रतिनिधियों सहित प्रगतिशील कृषकों ने भाग लिया। बैठक का संचालन डॉ. सतेन्द्र कुमार ने किया तथा आभार प्रदर्शन डॉ. एस.के. जाटव द्वारा किया गया। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा प्रगतिशील कृषकों सहित कुल 46 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

(पृष्ठ 13 का शेष)

खरीफ में फायदेमंद..

**पोषक तत्व प्रबंधन:** गोबर की खाद, कम्पोस्ट की मात्रा एवं उपयोग- सामान्यतः 6 से 8 टन प्रति हेक्टेयर की दर से कम्पोस्ट खाद का प्रयोग बोनी के पूर्व करना चाहिए तथा रासायनिक खादों में सामान्यतः नत्रजन 120 किग्रा, स्फुर 60-80 किग्रा, पोटाश 40-50 किग्रा एवं जिंक 25.30 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से अवश्य देना चाहिए।

रासायनिक उर्वरकों की मात्रा मिट्टी परीक्षण परिणाम के आधार पर देना अधिक लाभप्रद होगा। नत्रजन की एक तिहाई मात्रा एवं स्फुर तथा पोटाश की पूरी मात्रा बुआई करते समय सरते से कतारों में दें। शेष दो तिहाई में से एक तिहाई नत्रजन 25-30 दिन पर एवं एक तिहाई 45-50 दिन पर खड़ी फसल में दें। खेत में पानी भरने की स्थिति में एवं निंदाई गुड़ाई में देरी होने पर नत्रजन 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से निश्चित रूप से दें। खड़ी फसल में नत्रजन का प्रयोग निंदाई उपरान्त ही करें।

**नींदा प्रबंधन:** मक्का फसल को शुरूआती अवस्था में नींदा रहित होना चाहिये अन्यथा उत्पादन में कमी आती है। मक्का की फसल में एट्राजीन 1 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर बुवाई के बाद परन्तु उगने के पूर्व उपयोग करें। अन्तरवर्ती (मक्का-दलहन-तिलहन) फसल व्यवस्था में पेंडीमिथिलिन 1.5 किग्रा प्रति हेक्टेयर बोनी के तुरंत बाद किंतु अंकुरण के पूर्व नींदानाशकों का उपयोग करें। मक्का फसल में चौड़ी पत्तीवाले खरपतवारों की अधिकता होने पर 30-35 दिन पर 2,4-डी का 1.0 किग्रा प्रति हेक्टेयर उगे हुये खरपतवारों पर छिड़काव कर नियंत्रण किया जा सकता है।

**खरीफ मक्का का उत्पादन:** यदि उन्नत प्रबंधन किया जाये तो 60-80 क्विंटल संकर मक्का प्रति हेक्टेयर क्षेत्र से खरीफ में प्राप्त की जा सकती है।

कटाई गहाई एवं भण्डारण: मक्का के हरे भुट्टे भी बाजार में बेच कर मुनाफा कमाया जा सकता है साथ ही मक्का को दाने के रूप में भी बेचा जा सकता है। मक्का के भुट्टों से दाने अलग करने हेतु मक्का छीलक यंत्र से अलग कर सकते हैं। दानों को धूप में सुखाकर जब नमी लगभग 8-10 प्रतिशत रह जाये तो भण्डारण कर सकते हैं।

## वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

- ★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
- ★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
- ★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-



एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स,  
रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास  
होशंगाबाद रोड, भोपाल ( म.प्र. )  
फोन : ( 0755 ) 4233824

मो. : 9827352535, 9425013875,  
9300754675, 9826686078

### देवास में



कृषक दूत में  
विज्ञापन  
सदस्यता हेतु  
संपर्क करें।

**धर्मेन्द्र सिंह राजपूत**

ईडब्ल्यूएस-2, चंद्रतारा  
लिंकसिटी, राजोदा रोड,

देवास ( म.प्र. )

मो. 8839523598



## मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स

( कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान )

- औषधीय ● वन ● सब्जी ● फूल ● बीज ● स्प्रे पंप एवं पार्ट्स ● कीटनाशक ● जैविक खाद
- गार्डन टूल ● जैविक उत्पाद ● ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।
- वितरक - ● निर्मल सीड्स, जलगांव ● कलश सीड्स, जालाना ● अंकुर सीड्स, नागपुर
- वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ● दिनाकर सीड्स, गुजरात ● सर्टिड सीड्स, दिल्ली ● फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ● स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ● जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ● स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ● अनु प्रोडक्ट्स लि. ● श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल ( म.प्र. )

फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

# स्वराज 855 FE ताकत, तकनीक और भरोसे का संतुलित संगम

**चंडीगढ़।** भारतीय कृषि तेजी से परिवर्तन के दौर से गुजर रही है, जहां किसान उत्पादकता और परिचालन दक्षता बढ़ाने के लिए तेजी से मशीनीकरण और उन्नत कृषि पद्धतियों को अपना रहे हैं। कृषि मशीनीकरण की बढ़ती आवश्यकता और उत्पादकता पर बढ़ते दबाव के बीच आज के किसान ऐसे ट्रैक्टर चाहते हैं, जो विभिन्न कृषि परिस्थितियों में कई भूमिकाओं को कुशलतापूर्वक निभा सकें।

भारी खेत तैयारी और ढुलाई से लेकर उन्नत कृषि उपकरणों के संचालन तक, आधुनिक खेती के लिए ऐसी मशीनों की आवश्यकता है जो शक्ति, अनुकूलता और विश्वसनीयता का संतुलित मेल प्रदान करें। इन बदलती जरूरतों को पूरा करते हुए स्वराज ट्रैक्टर्स स्वराज 855 एफई के साथ भारतीय किसानों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और मजबूत कर रहा है। यह एक ऐसा ट्रैक्टर है जिसे विभिन्न कृषि कार्यों में भरोसेमंद प्रदर्शन, उन्नत कार्यक्षमता और दीर्घकालिक मूल्य प्रदान करने के लिए तैयार किया गया है।

विशेष रूप से भारतीय खेती की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया स्वराज 855 एफई विविध भू-भागों में कुशलतापूर्वक कार्य करने में सक्षम है और किसानों को कृषि के विभिन्न कार्यों में सहयोग देते हुए लागत को अनुकूलित करने तथा उत्पादकता बढ़ाने में मदद करता है।

स्वराज 855 एफई में एक हाई-टॉर्क इंजन दिया गया है, जो भारी उपकरणों और ट्रेलर अनुप्रयोगों के साथ सहज संचालन सुनिश्चित करता है। यह इंजन मजबूत खींचने की क्षमता से लैस है, जो गहन कृषि कार्यों और कठिन खेत परिस्थितियों में भी स्मूथ प्रदर्शन प्रदान करता है।

ऑपरेटर की सुविधा को और बेहतर बनाने के लिए इसमें साइड-शिफ्ट पार्टियल कॉन्स्टेंट मेश गियर बॉक्स का विकल्प दिया गया है, जिसमें सभी गियर लीवर ऑपरेटर की आसान पहुंच में होते हैं। बेहतर गियर बॉक्स को उच्च टॉर्क अनुप्रयोगों के लिए विकसित किया गया है और इसमें 1-आर कॉन्स्टेंटमेश व्यवस्था दी गई है, जो स्मूथ गियर एंगेजमेंट और बेहतर ड्राइविंग आराम सुनिश्चित करती है।

यह ट्रैक्टर 12+3 स्पीड कॉन्फिगरेशन (12 फारवर्ड एवं 3 रिवर्स गियर) के साथ आता है, जो विभिन्न कृषि कार्यों के लिए कई स्पीड विकल्प प्रदान करता है। इससे किसानों को खेत तैयारी, ढुलाई और उपकरण संचालन में बेहतर

❖ **स्वराज 855 एफई आधुनिक भारतीय कृषि के लिए प्रदान करता है शक्ति, प्रौद्योगिकी और विश्वसनीयता का आदर्श संयोजन**

❖ **बदलती कृषि आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया स्वराज 855 एफई शक्तिशाली प्रदर्शन, एडवांस्ड फीचर्स और बेहतरीन बहुउपयोगिता के साथ उत्पादकता को बढ़ाता है**



विशेष रूप से भारतीय खेती की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया स्वराज 855 एफई विविध भू-भागों में कुशलतापूर्वक कार्य करने में सक्षम है और किसानों को कृषि के विभिन्न कार्यों में सहयोग देते हुए लागत को अनुकूलित करने तथा उत्पादकता बढ़ाने में मदद करता है। स्वराज 855 एफई में एक हाई-टॉर्क इंजन दिया गया है, जो भारी उपकरणों और ट्रेलर अनुप्रयोगों के साथ सहज संचालन सुनिश्चित करता है। यह इंजन मजबूत खींचने की क्षमता से लैस है, जो गहन कृषि कार्यों और कठिन खेत परिस्थितियों में भी स्मूथ प्रदर्शन प्रदान करता है।

नियंत्रण और अधिक दक्षता प्राप्त होती है।

स्वराज 855 एफई में आईपीटीओ (इंडिपेंडेंट पावर टेक-ऑफ) विकल्प भी दिया गया है, जो पीटीओ आधारित उपकरणों के संचालन को आसान बनाता है। इसके अलावा, एमएसआरपीटीओ फीचर कई पीटीओ स्पीड प्रदान करता है, जिससे यह ट्रैक्टर हल्के लोड वाले कार्यों के लिए भी उपयुक्त बनता है और प्रदर्शन को बेहतर करने में मदद करता है।

हाइड्रोलिक दक्षता इस ट्रैक्टर की प्रमुख खूबियों में से एक है। 2000 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता के साथ स्वराज 855 एफई भारी लोड और उपकरणों को आसानी से संभाल सकता है। डीसीवी (डायरेक्शनल कंट्रोल वाल्व) विकल्प, जो सिंगल और डबल-एक्टिंग

दोनों कॉन्फिगरेशन में उपलब्ध है, हाइड्रोलिक उपकरणों पर तेज और अधिक सटीक नियंत्रण सुनिश्चित करता है, जिससे खेत कार्यों के दौरान उत्पादकता बढ़ती है।

टिकारूपन और लंबे समय तक बेहतर प्रदर्शन के लिए इस ट्रैक्टर में 12-इंच सिंगल क्लच या 12-इंच आईटीपीओ क्लच का विकल्प दिया गया है। बड़ा कॉन्टैक्ट एरिया बेहतर हीटडिसिपेशन सुनिश्चित करता है, जिससे क्लच की आयु बढ़ती है और लंबे कार्य घंटों में भी भरोसेमंद संचालन मिलता है।

स्वराज 855 एफई में ऑपरेटर की सुविधा और बेहतर ड्राइविंग अनुभव के लिए कई फीचर्स शामिल किए गए हैं। बड़े सीट पैन वाली डीलक्स सीट लंबे समय तक काम करने के

दौरान अधिक आराम प्रदान करती है और ऑपरेटर की थकान कम करने में मदद करती है। डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर ऑपरेशनल कंट्रोल्स और ट्रैक्टर संबंधी जानकारी को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है, जिससे ऑपरेटर अधिक आसानी और आत्मविश्वास के साथ कार्य कर सकते हैं।

इसके आधुनिक डिजाइन और उपयोगिता को और बढ़ाते हुए ट्रैक्टर में एलईडी फेंडर और टेल लैंप दिए गए हैं, जो सुबह जल्दी और देर शाम के कार्यों के दौरान बेहतर दृश्यता प्रदान करते हैं तथा कम रोशनी की परिस्थितियों में सुरक्षा और सुविधा बढ़ाते हैं।

दैनिक उपयोग को और आसान बनाने के लिए ट्रैक्टर में बंपर मार्डिंग पैड दिए गए हैं, जो हेवी-ड्यूटी बंपर की आसान इंस्टॉलेशन और लिफ्टिंग कार्यों में सहायता करते हैं। ईजी हिच फीचर के माध्यम से एक ही ऑपरेटर रियर ईजी हिच लीवर की मदद से ट्रॉली और उपकरणों को आसानी से जोड़ सकता है, जिससे मेहनत कम होती है और खेत कार्यों में समय की बचत होती है।

कठिन भू-भाग और हेवी-ड्यूटी कार्यों के लिए 4डब्ल्यूडी विकल्प सभी चार पहियों तक शक्ति पहुंचाता है, जिससे बेहतर ट्रैक्शन, अधिक लोड खींचने की क्षमता और बेहतर परिचालन स्थिरता सुनिश्चित होती है।

ग्राहकों के भरोसे और मानसिक संतुष्टि को मजबूत करते हुए स्वराज ट्रैक्टर्स, स्वराज 855 एफई पर 6 वर्ष की वारंटी प्रदान करता है, जो ब्रांड की विश्वसनीयता और ग्राहक संतुष्टि के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

स्वराज 855 एफई के साथ स्वराज ट्रैक्टर्स मजबूत और भविष्य के लिए तैयार मशीनीकरण समाधान प्रदान करने की अपनी प्रतिबद्धता को और सशक्त बना रहा है, जिससे किसान अधिक दक्षता और आराम के साथ उच्च उत्पादकता हासिल कर सकें।

जैसे-जैसे भारतीय कृषि आधुनिक होती जा रही है, स्वराज ट्रैक्टर्स किसानों को मजबूत और तकनीकी रूप से उन्नत समाधान उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है, जो उनकी बदलती जरूरतों को पूरा करते हैं। स्वराज 855 एफई इसी प्रतिबद्धता का प्रतीक है, जो भारतीय खेती के भविष्य के लिए प्रदर्शन, दक्षता और विश्वसनीयता का शानदार संयोजन प्रदान करता है।

## स्वराज की कहानी-किसानों की जुबाब्दी



### स्वराज-963 FE भारी काम भी आसानी से करता है

श्री सुनिल सिंह राठौड़ ग्राम नांदनेर, तहसील बुदनी, जिला- सीहोर (म.प्र.) का कहना है कि स्वराज 963 FE को पिछले तीन साल से चला रहा हूं। यह हमारी खेती के लिये बहुत ही अच्छा ट्रैक्टर है। हमारे यहां पर धान की खेती होती है। स्वराज मचाई में रोटावेटर एवं प्लाऊ में बहुत ही शानदार काम करता है। इस ट्रैक्टर से हमारे काम समय पर हो जाते हैं। जिसके कारण उपज भी ज्यादा मिल रही है। स्वराज ट्रैक्टर कम समय में अधिक काम करता है। स्वराज ट्रैक्टर में ज्यादा शक्ति होने से अधिक काम किया जाता है। स्वराज ट्रैक्टर में अधिकतम गियर होने के कारण काम और आसान होता है। इसका हाइड्रोलिक सिस्टम जबर्दस्त है जिससे भारी से भारी काम आसानी से करता है। यह ट्रैक्टर भारी कृषि उपकरणों के साथ बड़ी आसानी से काम करता है जैसे-रोटावेटर, कल्टीवेटर, डिस्क हैरो ट्रॉली, श्रेशर इत्यादि। ढुलाई के कामों में भी यह सबसे बढ़िया है। ज्यादा देर तक कार्य करने पर भी चालक को थकान महसूस नहीं होती। डीजल खपत में यह ट्रैक्टर सबसे किफायती है। कृषक सुनील सिंह राठौड़ का मो. नं. 9826607564 है।



### स्वराज-855 FE वरदान साबित हुआ

श्री देवेन्द्र सिंह राजपूत ग्राम नांदनेर, तहसील बुदनी, जिला सीहोर (म.प्र.) के किसान का कहना है स्वराज ट्रैक्टर मजबूत बॉडी, दमदार इंजिन और कम डीजल खपत में अधिक काम करने वाला ट्रैक्टर है। हमने स्वराज-855 FE पांच वर्ष पहले खरीदा था। आज भी बहुत शानदार काम कर रहा है। स्वराज ट्रैक्टर जुताई, बुवाई, ढुलाई तथा रोटावेटर जैसे कार्य बड़ी आसानी से करता है। हमारे यहां पर काली मिट्टी वाली जमीन है। उस पर यह ट्रैक्टर बहुत अच्छी जुताई करता है। कम समय में अधिक कार्य करता है। स्वराज ट्रैक्टर हमारे लिये वरदान साबित हुआ है। कृषक देवेन्द्र सिंह राजपूत का मो.नं. 9301083588 है।

# भारतीय किसानों के हितों को वैश्विक पहचान दिलाने में इफको की अहम भूमिका

इफको अध्यक्ष दिलीप संघाणी के नेतृत्व में महत्वपूर्ण संवाद

नई दिल्ली। भारत-अमेरिका कृषि सहयोग को नई गति प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के तहत वॉशिंगटन डी.सी. स्थित अमेरिका-भारत व्यापार परिषद ने इफको के अध्यक्ष एवं पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के प्रतिनिधि मंडल की मेजबानी की। इफको अध्यक्ष दिलीप संघाणी के नेतृत्व में आयोजित इस उच्चस्तरीय संवाद को अमेरिका-भारत व्यापार परिषद ने अपने आधिकारिक सोशल मीडिया मंचों पर प्रमुखता से साझा करते हुए कृषि क्षेत्र में दोनों देशों के बीच सहयोग को सुदृढ़ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया। अमेरिका-भारत व्यापार परिषद ने अपने संदेश में उल्लेख किया कि दिलीप संघाणी के नेतृत्व में हुए विचार-विमर्श ने भारत और अमेरिका के कृषि क्षेत्र के बीच सहयोग को नई ऊर्जा प्रदान करने, साझा चुनौतियों के समाधान तलाशने तथा उभरते अवसरों पर



सार्थक चर्चा का मार्ग प्रशस्त किया है। परिषद ने नवाचार आधारित कृषि नीतियों, टिकाऊ कृषि विकास, खाद्य सुरक्षा तथा किसानों की समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए दोनों देशों के बीच मजबूत साझेदारी की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। यह उल्लेखनीय है कि अमेरिका के प्रतिष्ठित उद्योग एवं व्यापार संगठन अमेरिका-भारत व्यापार परिषद द्वारा इस बैठक को सार्वजनिक रूप से प्रमुखता देना भारतीय सहकारिता आंदोलन की बढ़ती वैश्विक स्वीकार्यता, इफको की अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा तथा दिलीप संघाणी के नेतृत्व में भारतीय किसानों के हितों को वैश्विक मंचों पर प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किए जाने का प्रमाण है।

## ई विकास पोर्टल पर खाद वितरण की दी जानकारी

नर्मदापुरम। कलेक्टर सोमेश मिश्रा के निर्देशानुसार विस्थापित ग्राम काजरी में कृषि विभाग द्वारा विशेष शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में किसानों के ई-विकास पोर्टल पर 21 ई-टोकन जनरेट किए गए, जिससे किसानों को खाद प्राप्त करने में किसी प्रकार की असुविधा न हो। शिविर के दौरान ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी, पटवारी एवं कम्प्यूटर ऑपरेटर की टीम द्वारा किसानों को ई-टोकन प्रक्रिया एवं खाद वितरण संबंधी आवश्यक जानकारी भी प्रदान की गई। किसानों को बताया गया कि वे निर्धारित समयावधि में अपने निकटस्थ सहकारी समिति से खाद प्राप्त कर सकते हैं, ताकि कृषि कार्य प्रभावित न हों। इस प्रक्रिया से किसानों को समय पर खाद उपलब्ध कराने तथा वितरण व्यवस्था को सुगम एवं पारदर्शी बनाने में सुगमता होगी।



## डॉ. सोलंकी की धर्मपत्नी अनिता सोलंकी का निधन



भोपाल। इफको के मध्यप्रदेश राज्य विपणन प्रबंधक डॉ. दिनेश कुमार सोलंकी की धर्मपत्नी श्रीमती अनिता सोलंकी का विगत 4 जून 2026 को निधन हो गया। स्वर्गीय अनिता सोलंकी पिछले कुछ समय से बीमार थीं। आपका अंतिम संस्कार गृह ग्राम आगरा में किया गया। अनिता सोलंकी के असमय निधन पर इफको एवं कृषक दूत परिवार सहित उनके शुभचिंतकों ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है।

## पीएम धन-धान्य योजना जिला नोडल अधिकारी नियुक्त

भोपाल। प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना में प्रदेश के चयनित जिलों के लिए भारतीय प्रशासकीय सेवा के अधिकारियों को जिला नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा जारी आदेश में जिला उमरिया में अजय गुप्ता के स्थान पर संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास उमाशंकर भार्गव, आलीराजपुर में निधी निवेदिता के स्थान पर उपसचिव, किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग दिलीप कुमार कापसे एवं अनूपपुर में राहुल धोटे के स्थान पर उपसचिव, किसान कल्याण तथा कृषि विकास रोहित सिसोनिया को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है।

## 16 जून से 15 अगस्त तक मत्स्याखेट पर प्रतिबंध

भोपाल। मध्यप्रदेश में मछलियों के प्राकृतिक प्रजनन को बढ़ावा देने और जलीय पारिस्थितिकी के संरक्षण के लिए 16 जून से 15 अगस्त 2026 तक की अवधि को बंद ऋतु घोषित किया गया है। इन दो महीने की अवधि में प्रदेश की समस्त नदियों और उनसे जुड़े जलाशयों में मत्स्याखेट पर पूरी तरह प्रतिबंध रहेगा। संचालनालय मत्स्योद्योग ने इस संबंध में दिशा-निर्देश जारी किए हैं।

# कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्राण कर्मचारी

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824  
 मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675  
 E-mail: krishak\_doot@yahoo.co.in Website: www.krishakdoot.org

**कृषक दूत द्वारा प्रकाशित विभिन्न बहुपयोगी पुस्तकें**

 सब्जियों की कृषि प्रदर्शनालय मूल्य 10/-	 फसलों में एकीकृत रोग प्रबंधन मूल्य 210/-	 घने घने 3-मन खेती मूल्य 20/-	 मत्स्योद्योग की उन्नत तकनीकें मूल्य 100/-	 फसलों में कीट रोग प्रबंधन मूल्य 70/-	 सब्जियों में पोषक तत्व प्रबंधन मूल्य 20/-	 फलों की खेती मूल्य 20/-
 खान की उन्नत खेती मूल्य 100/-	 बांसवाड़ी की खेती मूल्य 20/-	 खरीफ फसलों की खेती मूल्य 20/-	 कपास की खेती मूल्य 20/-	 बने की खेती मूल्य 25/-	 पशुपालन मूल्य 100/-	 बकरी पालन मूल्य 100/-
 पौधक खेती मूल्य 20/-	 खास करण्ड मार्गदर्शिका मूल्य 20/-	 खरपाखाव प्रबंधन मूल्य 20/-	 भण्डारण के वैज्ञानिक तरीके मूल्य 20/-	 कृषि यंत्रों का चुनाव एवं रखरखाव मूल्य 50/-	 फसलों की फसलों की खेती मूल्य 20/-	 विपणन फसलों की उन्नत खेती मूल्य 20/-
 गुनाप की खेती मूल्य 20/-	 काली की उन्नत खेती मूल्य 20/-	 डेनर का रखरखाव मूल्य 50/-	 गिरे की उन्नत खेती मूल्य 20/-	 कला की शीघ्र उपचार मूल्य 100/-	 पशुपक्षी पालन मूल्य 200/-	

मुख्य कार्यालय : एफ.एम. 16, ब्लॉक सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.) फोन (0755) 4233824  
 E-mail: krishak\_doot@yahoo.co.in Website: www.krishakdoot.org

# कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्राण कर्मचारी

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन-0755-4233824  
 मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675  
 E-mail: krishak\_doot@yahoo.co.in Website: www.krishakdoot.org

**सदस्यता राशि का ब्यौरा**

■ वार्षिक	: 700/-	■ द्विवार्षिक	: 1300/-
■ त्रिवार्षिक	: 1900/-	■ पंचवर्षीय	: 3100/-
■ दसवर्षीय	: 6100/-	■ आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र "कृषक दूत" की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रूप (अंकों में)..... (शब्दों में).....

बैंक का नाम..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक.....

दिनांक..... संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान..... प्रतिनिधि का नाम..... हस्ताक्षर सदस्य

दिनांक..... एवं हस्ताक्षर..... एवं संस्था सील

उम्मीद से  
ज्यादा का वादा

ACE  
TRACTORS

50  
HP

Chetak DI 65 (4WD)

4

सिलिण्डर का  
4088 CC  
दमदार इंजन

### विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्रयल क्लच
- हेवी ड्यूटी फ्रंट एक्सल (करासो)
- लिफ्ट 2000 kg
- आगे के टायर 9.5x24
- पीछे के टायर 16.9x28
- MRF Tyre



दमदार ट्रैक्टर  
शानदार परफॉर्मेंस



हर कदम हर डगर

ACE TRACTORS

हर किसान का हमसफर

DI 350 NG | 40 HP

### विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- ऑयल ब्रेक्स (तेल में डूबे)
- सिंगल / ड्रयल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm

100%  
Swadeshi

ACE ट्रैक्टर 15-90 HP में उपलब्ध

कस्टमर हेल्प लाइन  
1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राइवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेन्स उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - **संजय कुमार : 9540943883**

**ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.**

Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India

Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com

# नया स्वराज मेरा SWARAJ



**नया स्वराज अब 22.37kW - 37.28kW  
(30 - 50 HP) में उपलब्ध**

स्वराज ट्रैक्टर की अधिक जानकारी के लिए  
**1800 425 0735** (टोल फ्री नंबर) पर सम्पर्क करें.

**UNMATCHED**

- परफॉर्मंस
- कम्फर्ट
- पावर
- मलबूती
- स्टायून

**6 YEAR WARRANTY**

[www.swarajtractor.com](http://www.swarajtractor.com)